FOR REFERENCE ONLY

EDUCATION IN INDIA

A graphic presentation

-54
370·212
IND-E

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक अपने ढंग का चौथा प्रकाशन है। इस में सात मुख्य समूहों के अन्तर्गत संख्या-चार्टों के माध्यम से भारत में शिक्षा की प्रगति का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक चार्ट में शिक्षा के एक विशेष पहलू को दिखाया गया है और उस के साथ संक्षिप्त व्याख्यात्मक टिप्पणी भी दी गई है।

आशा है कि प्रथम तीन प्रकाशनों की भांति इस लेखा-चित्रीय प्रकाशन को भी भारत तथा विदेश में शिक्षा में रुचि लेने वाले सभी व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाएगा।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैं राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों के शिक्षा विभागों और विश्वविद्यालयों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने इस प्रकाशन के लिए आधारभूत सामग्री देने की कृपा की है। इसके अतिरिक्त मैं शिक्षा मंत्रालय में अपने सहयोगियों का भी आभारी हूं जिन्होंने सामग्री को प्रस्तुत पुस्तक का रूप देने में योगदान दिया है।

पी० एन० कृपाल,
सचिव एवं शिक्षा सलाहकार
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

नई दिल्ली,
30 जून, 1966

FOREWORD

The present publication, the fourth of its kind, attempts to give a picture of education in India through the medium of statistical charts selected under seven broad groups. Each chart depicts a particular aspect of education in India and is accompanied by a short explanatory note.

I hope that this graphic presentation, like its three predecessors, will be favourably received by all those interested in education in this country and abroad.

I would like to take this opportunity to express my sincere thanks to the Education Departments of the States and Union Territories as well as the Universities who have so kindly supplied the basic material on which this publication is based and also to my colleagues in the Ministry of Education who have worked on that material to produce the present publication.

P. N. KIRPAL,
Secretary & Educational Adviser
Ministry of Education
Government of India.

New Delhi,
The 30th June, 1966.

NIEPA DC
D08695

©

ED. 412
3000

370.954021
IND-I

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No ..... D 8695
Date 07-07-95

PUBLICATION NO. 788

PRICE

Inland - Rs. 3.70 Paise

Foreign - 8 Sh. 8 d.
$ 1 34 Cents

परिवर्तन सारणी

गणना पद्धति

10 मिलियन	=	1 करोड़
1 मिलियन	=	10 लाख
100 हज़ार	=	1 लाख

सिक्के

1 पौंड स्टर्लिंग	=	21.0 रुपये
1 डालर	=	7.5 रुपये.

CONVERSION TABLE

SYSTEM OF COUNTING

10	Million	=	1 crore
1	Million	=	10 lakh
100	Thousand	=	1 lakh

COINAGE

1	pound sterling	=	21·0 rupees
1	dollar	=	7·5 rupees

CONTENTS

	Page
FOREWORD	(i)
CONVERSION TABLE	(ii)
GENERAL	
1. People of India	1
2. Educational System	3
3. Literacy in India	5
4. Total Number of Students in India	7
5. Educational Administrative Set-up at the Centre	9
PROGRESS OF EDUCATION	
6. Growth of Institutions in India	11
7. Progress of Enrolment	13
8. Progress of Technical Education	15
FIVE-YEAR PLANS	
9. Outlay under Plan Schemes	17
EDUCATION IN THE STATES	
10. Number of Students in States and Territories	19
11. State Educational Budgets	21
12. Expenditure on Education	23
13. Free Education in India	25
14. Compulsory Education in India	27
SCHOOL EDUCATION	
15. Scheme of School Classes in India	29
16. Wastage at Primary Classes	31
17. Progress of Basic Education	33
18. Teachers in Schools	35
19. Trained School Teachers by Salary and Qualification	37
UNIVERSITY EDUCATION	
20. Universities in India	39
21. Teachers in Universities and Colleges	41
22. Out-put of Graduates	43
23. Indian Students Abroad	45
24. Foreign Students in Indian Universities	47
SCHOLARSHIPS	
25. Scholarships and Other Financial Concessions (Beneficiaries)	49
26. Scholarships and Stipends (by Source)	51
27. National Scholarships	53
LIST OF STATISTICAL PUBLICATIONS	55

विषय-सूची

पृष्ठ

प्राक्कथन . . . . . (i)

परिवर्तन सारणी . . . . . (ii)

सामान्य

1. भारत की जनसंख्या 1
2. शिक्षा प्रणाली 3
3. भारत में साक्षरता 5
4. भारत में विद्यार्थियों की कुल संख्या 7
5. केन्द्र में शिक्षा प्रशासन का ढांचा 9

शिक्षा की प्रगति

6. भारत में संस्थाओं का विकास 11
7. विद्यार्थी-संख्या में वृद्धि 13
8. तकनीकी शिक्षा की प्रगति 15

पंचवर्षीय योजनाएं

9. योजनागत स्कीमों का परिव्यय 17

राज्यों में शिक्षा

10. राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों में विद्यार्थियों की संख्या . . . 19
11. राज्यों के शिक्षा-बजट 21
12. शिक्षा-व्यय 23
13. भारत में निःशुल्क शिक्षा 25
14. भारत में अनिवार्य शिक्षा 27

स्कूल-शिक्षा

15. भारत में स्कूल-कक्षाओं की योजना 29
16. प्राथमिक कक्षाओं में अपव्यय 31
17. बुनियादी शिक्षा की प्रगति 33
18. स्कूलों में अध्यापक 35
19. स्कूलों के प्रशिक्षित अध्यापक-वेतन तथा योग्यता के अनुसार . . 37

विश्वविद्यालयी शिक्षा

20. भारत के विश्वविद्यालय 39
21. विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के अध्यापक 41
22. स्नातकों की संख्या 43
23. विदेश-स्थित भारतीय विद्यार्थी 45
24. भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्र 47

छात्रवृत्तियां

25. छात्रवृत्तियां तथा अन्य आर्थिक रियायतें (हिताधिकारी) . . . 49
26. छात्रवृत्तियां और वृत्तिकाएं--स्रोतानुसार 51
27. राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां 53

सांख्यिकीय प्रकाशनों की सूची 55

भारत की जनसंख्या

PEOPLE OF INDIA

इस चार्ट में भारत की 1966 की प्रत्याशित जनसंख्या तथा उसका आयु के अनुसार वर्गीकरण दिया गया है। 1966 की कुल प्रत्याशित जनसंख्या 495 मिलियन है जिसमें पुरुषों की संख्या 255 मिलियन और स्त्रियों की संख्या 240 मिलियन है। लगभग 35 प्रतिशत लोग 5-19 वर्ष के आयु-वर्ग के हैं जो मोटे तौर पर स्कूल की अवस्था की जनसंख्या है।

इस चार्ट में 1961 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या का व्यावसायिक वर्गीकरण तथा जन्म-मृत्यु की दरों का रुख़ दिखाया गया हैं। औसत मृत्यु-दर 1921-30 की 40.4 से घट कर 1951-60 में 21.7 रह गई है जबकि औसत जन्म-दर 1921–30 की 50.8 से घट कर 1951-60 में 40.6 ही हुई है। इसके परिणामस्वरूप उस अवधि में प्रत्याशित आयु 25.4 से बढ़ कर 41.9 हो गई है।

This chart shows the projected population of India in 1966 and its age-distribution. The total population is expected to be 495 million in 1966 consisting of 255 million males and 240 million females. About 35 percent of the people will be in the age-group 5-19 which roughly corresponds to the school age population.

The chart also depicts the trend of the vital rates and the occupational pattern of the population of the country according to the 1961 Census. The average death rate has been reduced from 40·4 during 1921—30 to 21·7 during 1951—60, whereas the average birth rate has fallen only from 50·8 during 1921—30 to 40·6 during 1951—60. As a result, the expectation of life has increased from 25·4 to 41·9 during this period.

PEOPLE OF INDIA

1966

AGE-PYRAMID

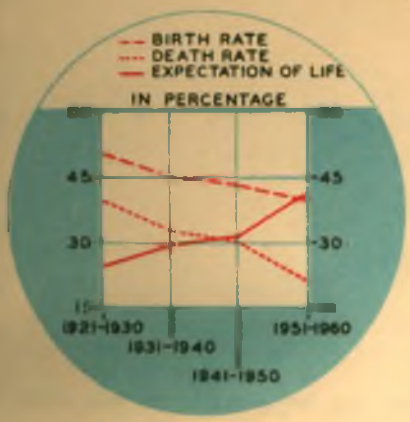

POPULATION BY PROFESSION

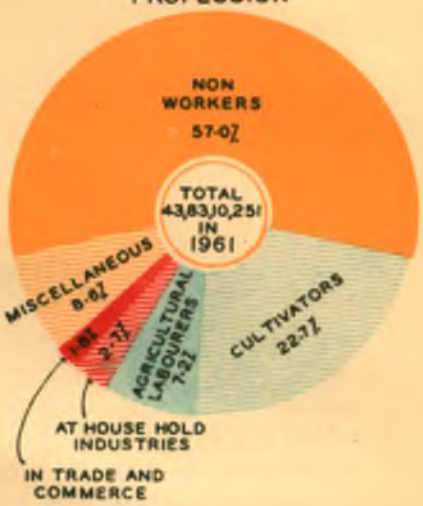

शिक्षा प्रणाली, 1965

EDUCATIONAL SYSTEM, 1965

इस चार्ट में देश की शिक्षा प्रणाली को अखिल भारतीय आधार पर चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है। किन्तु इस प्रणाली के विषय में विभिन्न राज्यों में कुछ अंतर पाया जाता है। चार्ट में पूर्व प्राथमिक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तथा अनुसंधान स्तर तक शिक्षा-प्रगति के मार्ग को दिखाया गया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में यह व्यवस्था की गई है कि प्राथमिक अथवा जूनियर बेसिक स्कूल और मिडिल अथवा सीनियर बेसिक स्कूल से विद्यार्थी धंधों में तथा औद्योगिक स्कूलों में जाएं तथा हाई स्कूल/उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी पोलिटेक्निक स्कूलों तथा माध्यमिक ग्रेड के प्रशिक्षण की ओर उन्मुख हों।

यद्यपि भारत की अधिकांश शिक्षा-संस्थाओं में सह-शिक्षा अपनाई गई है किन्तु कुछ ऐसी संस्थाएं भी हैं जो केवल लड़कियों और स्त्रियों के लिए हैं।

An attempt has been made, in this chart, to depict the country's system of education on an all-India basis. There are, however, some variations in this system from State to State. The path of progress in the educational ladder from the pre-primary stage to the post-graduate and research stage is indicated in this chart. The Indian system of education provides for the diversion of students in primary or junior basic and middle or senior basic schools to trade and industrial schools and for students in high/higher secondary stage to polytechnics and secondary grade training.

While most of the educational institutions in India are co-educational in character there are some which are meant exclusively for girls and women.

EDUCATIONAL SYSTEM, 19

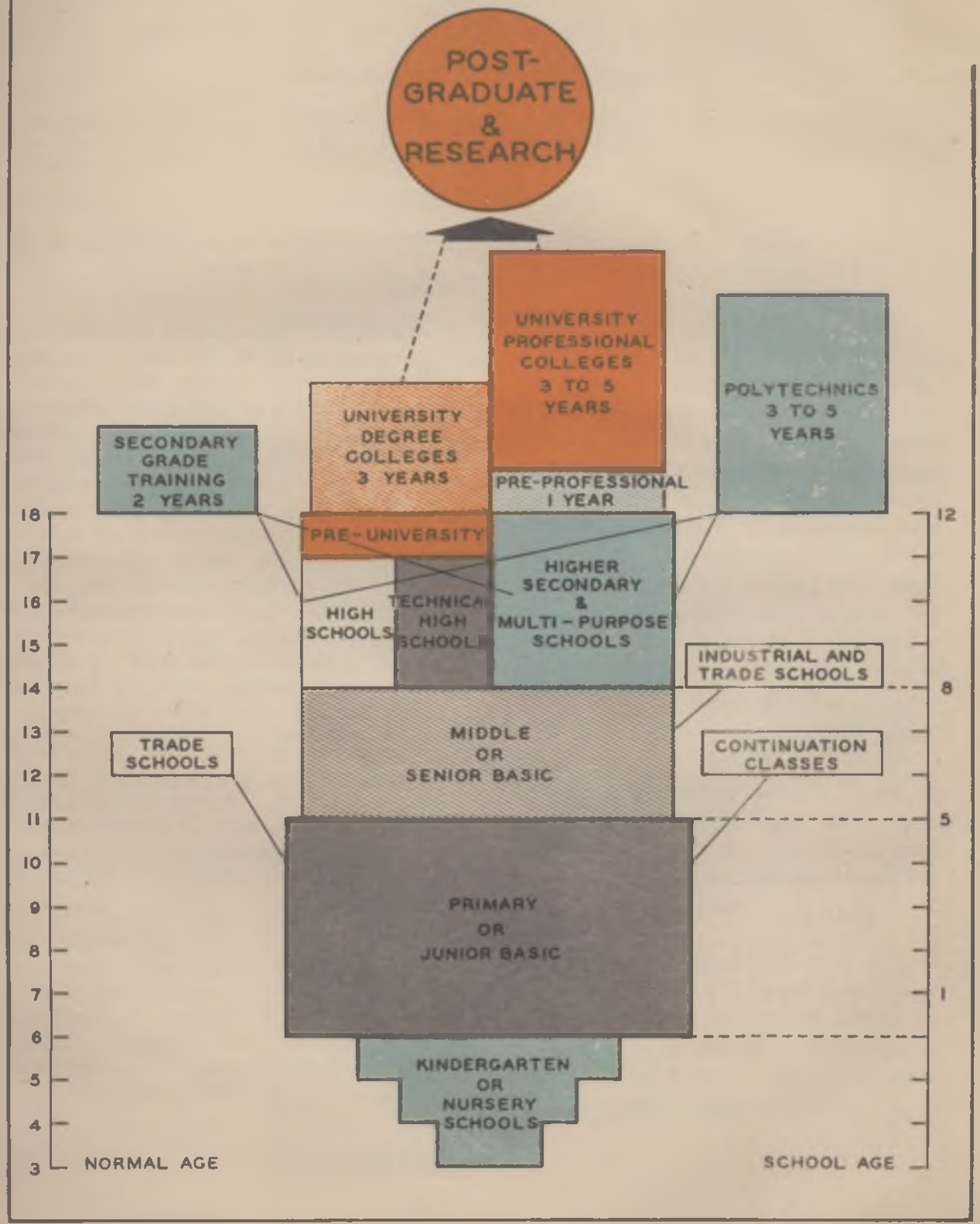

भारत में साक्षरता, 1961

LITERACY IN INDIA, 1961

इस चार्ट में साक्षरता के जो प्रतिशत आंकड़े दिए गए हैं वे 1961 की जनगणना पर आधारित हैं।

राज्यों में सब से अधिक साक्षरता प्रतिशतता केरल में है; न केवल स्त्रियों और पुरुषों की सम्मिलित रूप से प्रतिशतता (46.8 प्रतिशत) बल्कि उनकी अलग-अलग प्रतिशतता भी (क्रमशः 38.9 और 55.0 प्रतिशत) केरल में सबसे अधिक है। संघशासित क्षेत्रों में साक्षरता का सबसे अधिक प्रसार (केरल से भी अधिक) दिल्ली में है जो औसतन 52.7 प्रतिशत है (60.8 प्रतिशत पुरुषों में तथा 42.5 प्रतिशत स्त्रियों में)। नेफा में औसत साक्षरता 2.2 प्रतिशत और पुरुषों तथा स्त्रियों में क्रमशः 12.3 और 1.5 प्रतिशत है जो सबसे कम है। समस्त भारत की औसत साक्षरता 24 प्रतिशत है (पुरुषों में 34.4 प्रतिशत और स्त्रियों में 12.9 प्रतिशत)। केवल 12 राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों के आंकड़े इस औसत से अधिक हैं।

चार्ट में यह भी दिखाया गया है कि औसत साक्षरता जो 1901 में 5 प्रतिशत थी 1961 में बढ़ कर 24 प्रतिशत हो गई। पुरुषों की साक्षरता 1901 की 10 प्रतिशत से बढ़ कर 1961 में 34.4 प्रतिशत हुई है और स्त्रियों की साक्षरता 1901 की 0.8 प्रतिशत से बढ़ कर 1961 में 13 प्रतिशत हुई है।

ध्यान देने की बात है कि इस चार्ट में साक्षरता के जो प्रतिशत आंकड़े दिए गये हैं वे भारत की समग्र जनसंख्या पर आधारित हैं। यदि इस गणना में से 0-9 वर्ष के आयु-वर्ग को निकाल दिया जाए तो समस्त भारत की साक्षरता 30.1 प्रतिशत (पुरुषों में 43.6 और स्त्रियों में 15.5 प्रतिशत) हो जाएगी।

The literacy percentages depicted in the chart are based on the last (1961) Census of India

Among the States, literacy percentage was the highest in Kerala not only among men and women taken together (46·8 per cent) but also among men (55·0 per cent) and women (38·9 per cent) separately. Among the Union Territories, literacy was the most widespread (even more than Kerala) in Delhi, the average being 52·7 per cent (60·8 per cent for men and 42·5 per cent among women). N.E.F.A. had the lowest average literacy (2·2 per cent) and also among men (12·3 per cent) and women (1·5 per cent) separately. The all-India average was 24 per cent (34·4 per cent in the case of men and 12·9 per cent in the case of women). Only 12 States and Union Territories were above this average.

The chart also shows that the average literacy percentage has increased from 5 in 1901 to 24 in 1961. Among men the literacy rate has increased from 10 in 1901 to 34·4 in 1961 and among women it has increased from 0·8 per cent in 1901 to 13 per cent in 1961.

It may be noted that the literacy percentages depicted in the chart have been calculated on the basis of the overall population of India. If, however, the age-group 0-9 is excluded from reckoning, the all-India literacy percentage comes to 30·1 (43·6 for men and 15·5 for women).

LITERACY IN INDIA

1961

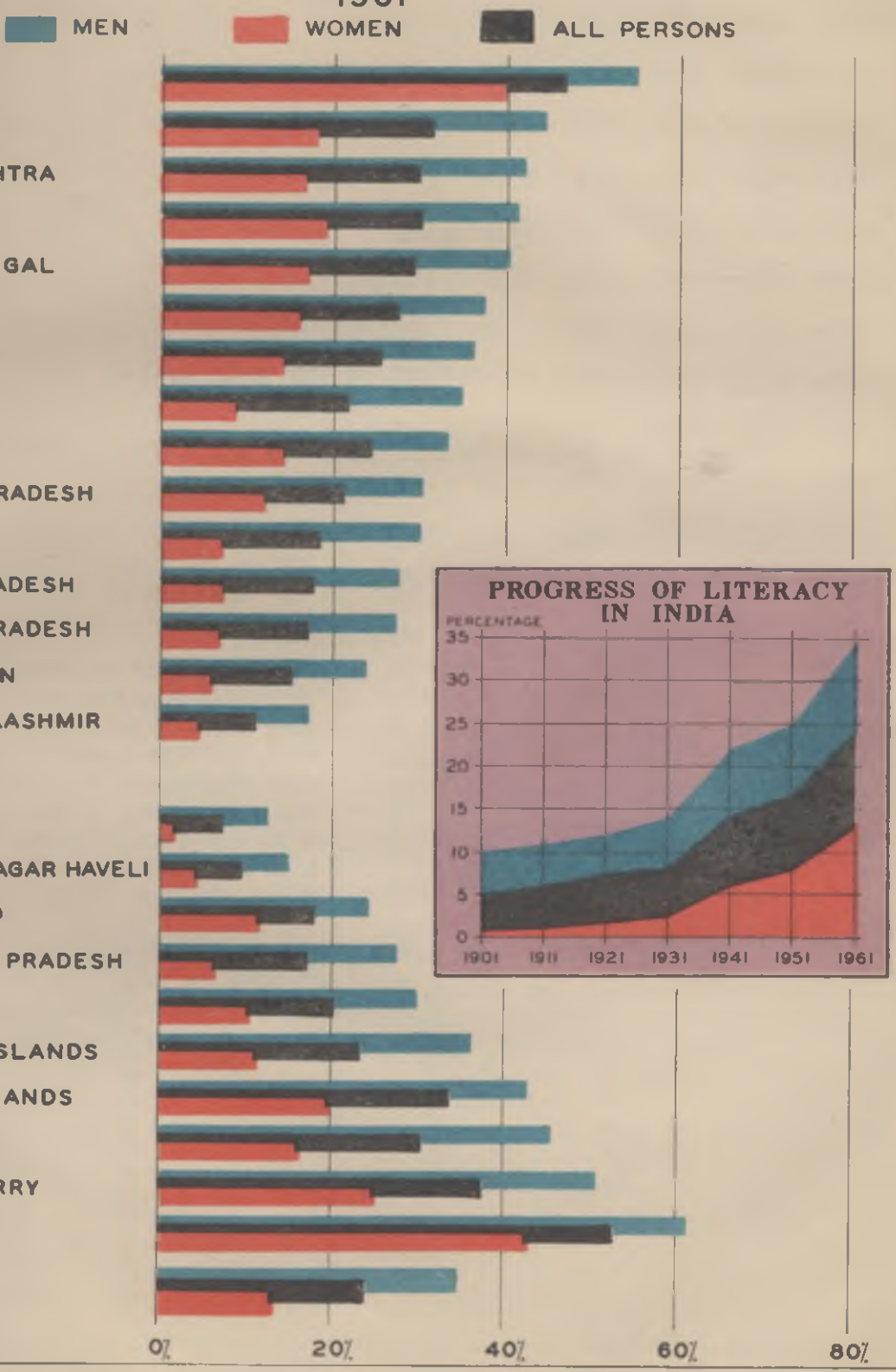

भारत में विद्यार्थियों की कुल संख्या, 1965-66

TOTAL NUMBER OF STUDENTS IN INDIA, 1965-66

इस चार्ट में 1965-66 में विभिन्न शिक्षा-स्तरों की विद्यार्थी-संख्या दिखाई गई है।

प्राथमिक और पूर्व-प्राथमिक स्तर में अनुमानित विद्यार्थी संख्या 494 लाख, मिडिल स्तर में 96 लाख और हाई/उच्चतर माध्यमिक स्तर में 53 लाख है। व्यावसायिक और विशेष शिक्षा के स्कूलों में विद्यार्थी-संख्या 41 लाख, कालेज स्तर की सामान्य शिक्षा संस्थाओं में 12 लाख और व्यावसायिक तथा विशेष शिक्षा संस्थाओं में 5 लाख है।

1949-50 में सौ में से 7 व्यक्ति और 1956-57 में सौ में से 9 व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की शिक्षा संस्था में जा रहे थे: 1965-66 में यह संख्या 14 हो गई है।

The enrolment in different stages of education in 1965-66 is depicted in this chart.

The estimated enrolment in primary and pre-primary stage was 494 lakh, in the middle stage it was 96 lakh and in the high/higher secondary stage it was 53 lakh. The enrolment was 41 lakh in vocational and special education schools, 12 lakh in general educational institutions at college level and nearly 5 lakh in institutions of professional and special education.

For every hundred people, nearly 7 were attending an educational institution of one type or another in 1949-50 and 9 in 1956-57. In 1965-66 the corresponding number was 14.

TOTAL NUMBER OF STUDENTS IN INDIA, 1965-66

[ESTIMATED]

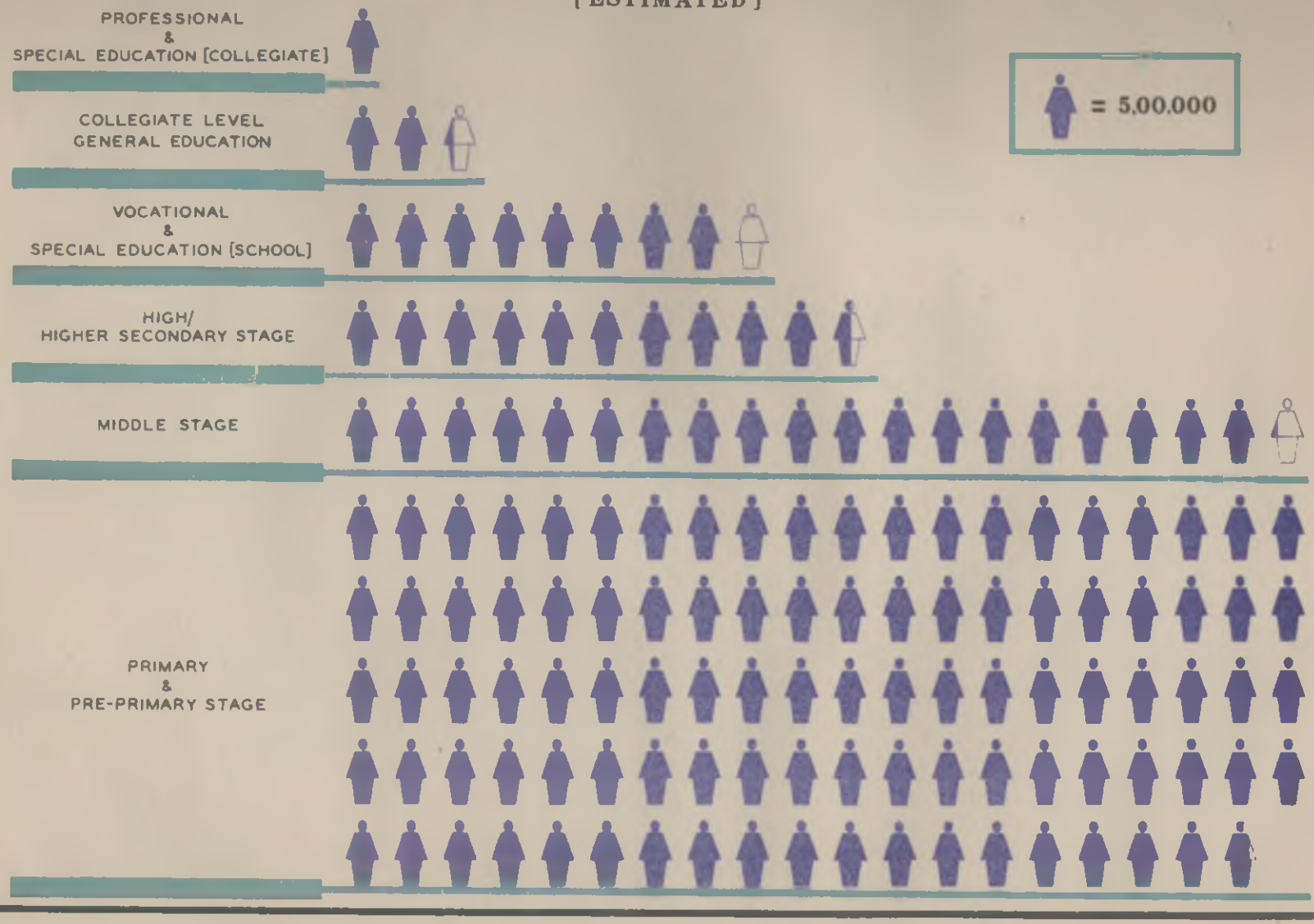

केन्द्र में शिक्षा-प्रशासन का ढांचा

EDUCATIONAL ADMINISTRATIVE SET-UP AT THE CENTRE

25-2-1966 की केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय का जो ढांचा था उसे सामने के चार्ट में दिखाया गया है।

इस मंत्रालय का शिक्षा से संबंध केवल मोटे तौर पर है क्योंकि संविधान के अनुसार शिक्षा राज्य-विषय है। अतः शिक्षा मंत्रालय स्कूल और विश्वविद्यालय की शिक्षा, सामाजिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा मनोरंजन, भाषा और साहित्य, तकनीकी शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान, छात्र वृत्तियां, ललित कलाएं और सांस्कृतिक गतिविधियों से सम्बन्धित कार्यों की देखता है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा और अन्य सम्बद्ध विषयों की अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं तथा यूनेस्को से सम्बन्धित काम भी देखता है।

The chart opposite shows the set-up of the Union Ministry of Education as on 25-2-1966. This Ministry is concerned with education in a broad sense, because constitutionally Education is a State subject in this country. The Education Ministry thus handles issues relating to school and university education, social education, physical education and recreation, languages and literature, technical education and scientific research, scholarships, fine arts and cultural activities. It also deals with UNESCO and other international organisations connected with education and associated subjects.

EDUCATIONAL ADMINISTRATIVE SET-UP AT THE CENTRE

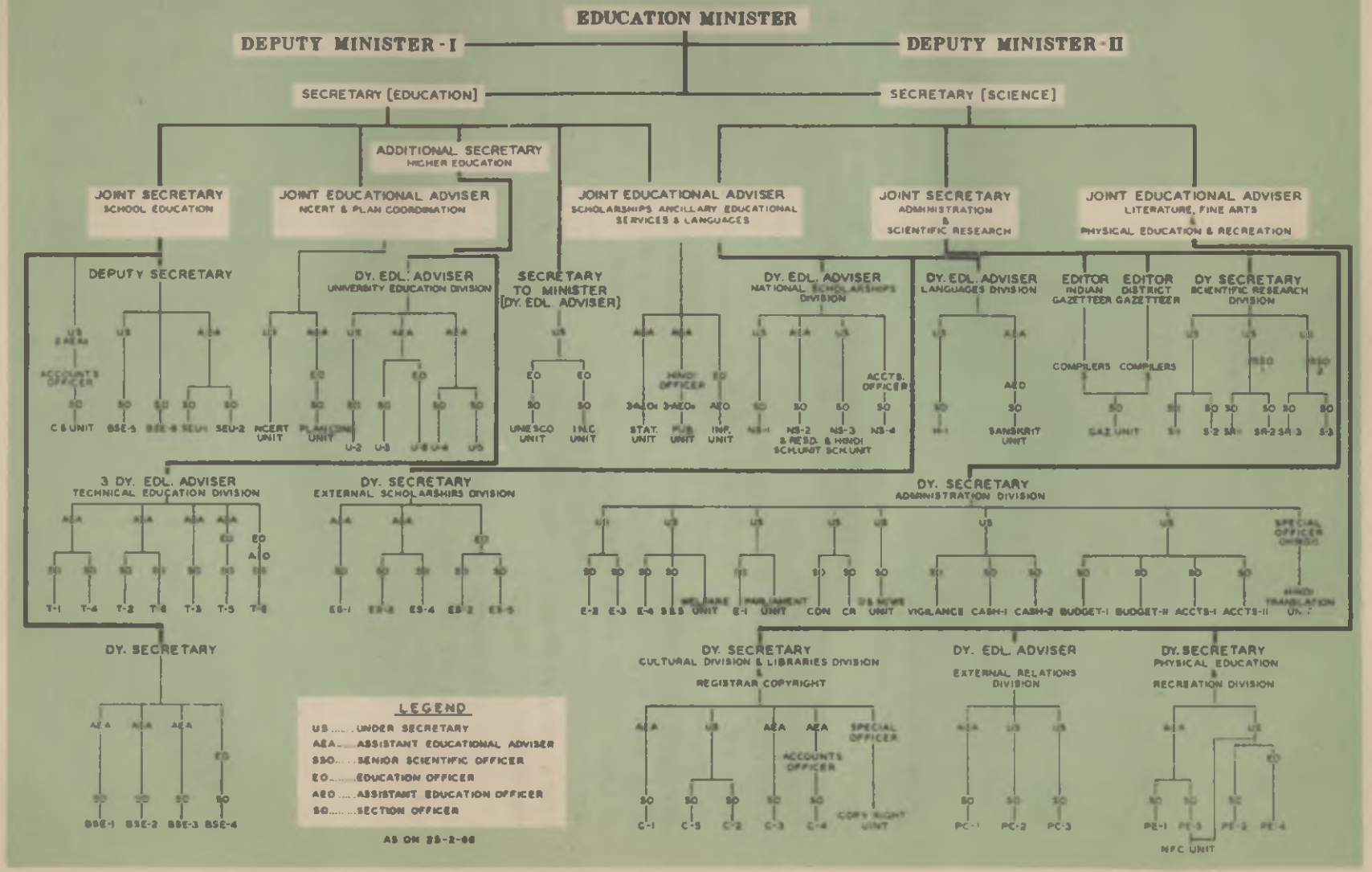

भारत में संस्थाओं का विकास

GROWTH OF INSTITUTIONS IN INDIA

भारत की विभिन्न स्तर और विभिन्न प्रकार की मान्यता प्राप्त शिक्षा-संस्थाओं की संख्या में 1950-51 से 1965-66 की अवधि में जो वृद्धि हुई है उसे इस चार्ट में दिखाया गया है।

इस अवधि में संस्थाओं की कुल संख्या लगभग तिगुनी हो गई है। यदि हम विभिन्न प्रकार की संस्थाओं की अलग अलग लें तो विशेष शिक्षा के स्कूलों को छोड़ कर शेष सभी स्कूलों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालयों, माध्यमिक तथा इंटरमिजियेट शिक्षा बोर्डों तथा अनुसंधान संस्थानों की संख्या दुगुनी से भी अधिक हो गई है। कला और विज्ञान के कालेज तीन गुणा हो गए हैं और व्यावसायिक तथा तकनीकी कालेजों की संख्या लगभग सात गुणा हो गई है। स्कूलों में प्राथमिक स्कूलों की संख्या में इस अवधि में 2 लाख की वृद्धि हुई है जो अन्य सभी संख्याओं के मुकाबले में अधिक है। इसके बाद माध्यमिक स्कूल (57 हजार) आते हैं। व्यवसायिक तथा तकनीकी स्कूलों में 1,800 की वृद्धि हुई है। समाज (प्रौढ़) शिक्षा केन्द्रों की संख्या 2.7 लाख बढ़ी है।

1949-50 में औसतन 1,300 व्यक्तियों के लिए एक शिक्षा संस्था थी और 1965-66 की तदनुरूप संख्या 600 है।

This chart presents the growth in number of recognised educationa stitutions of various levels and types ir country during the period 1950-51 to 196

The total number of institutions has n tripled during this period. Taking institu of different types separately, all excep schools for special education show a st increase. Universities, boards of secon and intermediate education and rese institutions have more than doubled. and science colleges have tripled and pr sional and technical colleges have incre nearly 7 times. Among the schools, pri schools outnumbered all others by recor an addition of 2 lakh schools during period. This is followed by secondary sch (57 thousand), while vocational and techi schools have increased by 18 hundred. social (adult) education centres have incre by 2·7 lakh.

On an average there was one educati institution for 1,300 persons in 1949-50. 1965-66 the corresponding figure was 60

GROWTH OF INSTITUTIONS IN INDIA

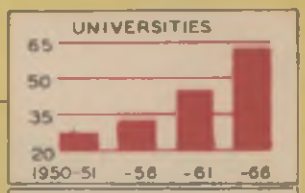

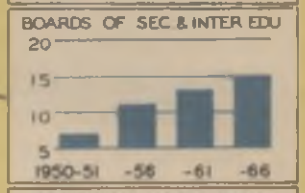

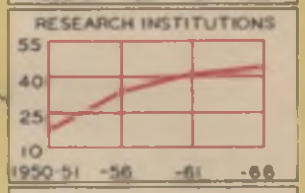

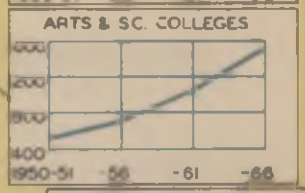

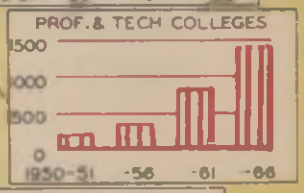

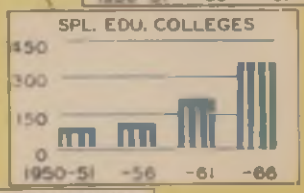

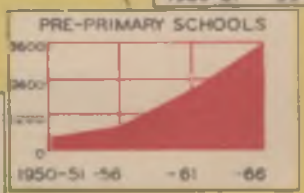

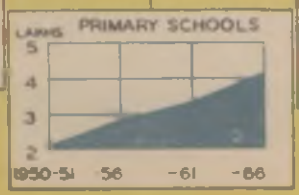

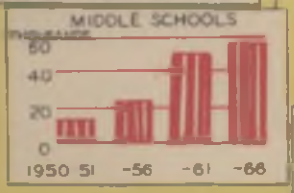

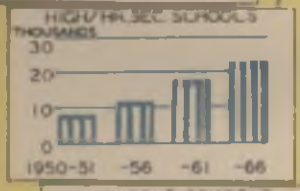

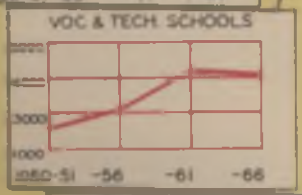

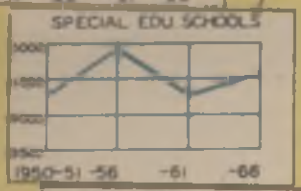

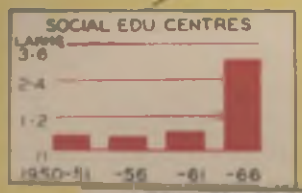

विद्यार्थी संख्या में वृद्धि, 1950—64

PROGRESS OF ENROLMENT, 1950—64

इस चार्ट में 1950-51 से 1963-64 के बीच विभिन्न प्रकार और विभिन्न स्तर की शिक्षा-संस्थाओं के विद्यार्थियों की संख्या में हुई वृद्धि को दिखाया गया है। शिक्षाधीन छात्रों की कुल संख्या में 3.6 करोड़ की वृद्धि हुई है—1950-51 में यह संख्या 2.6 करोड़ थी जो 1963-64 में 6.2 करोड़ हो गई। यह वृद्धि 28 लाख प्रति वर्ष की औसत दर से हुई है। 1950-56 (पहली पंचवर्षीय योजना) की अवधि में 16 लाख प्रति वर्ष, 1956-61 (दूसरी पंचवर्षीय योजना) की अवधि में 28 लाख प्रति वर्ष और 1961-64 (तीसरी पंचवर्षीय योजना के तीन वर्ष) में 47 लाख प्रति वर्ष की औसत वृद्धि हुई है।

इस चार्ट में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अल्प आय वाले वर्गों के विद्यार्थियों की संख्या में हुई वृद्धि को भी दिखाया गया है। इन विद्यार्थियों की न केवल कुल संख्या में वृद्धि हुई है बल्कि कुल विद्यार्थी संख्या में उनकी प्रतिशतता भी बढ़ी है जो 1950-51 की 21.9 से बढ़ कर 1963-64 में 35.9 हो गई है।

This chart gives the progress of enrolment in educational institutions of various types and levels from 1950-51 to 1963-64. The total number of pupils under instruction increased by 3·6 crore—from 2·6 crore in 1950-51 to 6·2 crore in 1963-64—at an average rate of 28 lakh per annum. The average increase was 16 lakh per annum during 1950—56 (first Five-Year Plan), 28 lakh per annum during 1956—61 (second Five-Year Plan) and 47 lakh per annum during 1961—64 (first three years of the Third Plan).

The chart also depicts the progress in enrolment of scheduled caste, scheduled tribe and low income group pupils. The enrolment of these pupils have not only increased in absolute terms but also in terms of percentage to total enrolment from 21·9 in 1950-51 to 35·9 in 1963-64.

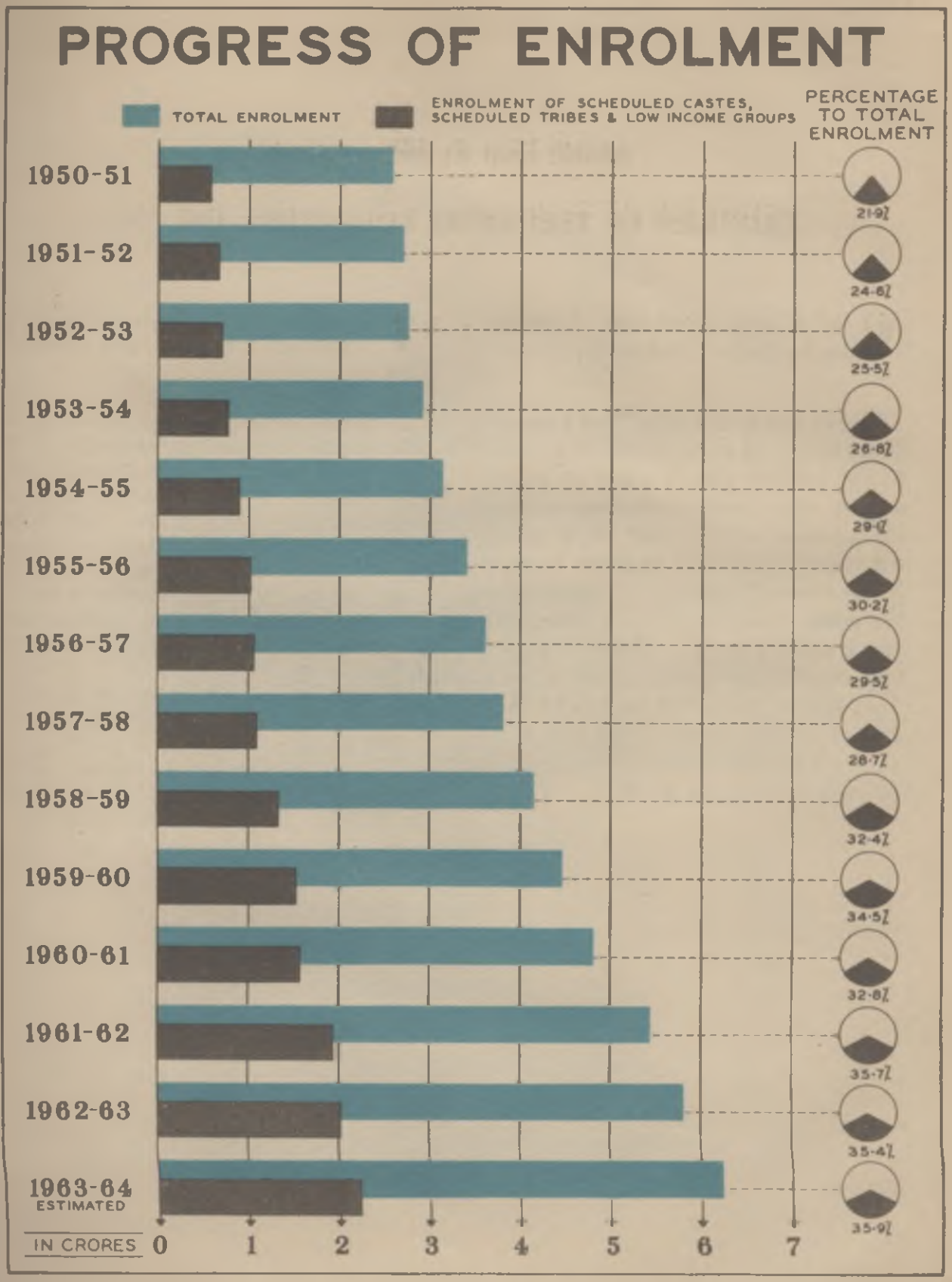
PROGRESS OF ENROLMENT
TOTAL ENROLMENT
ENROLMENT OF SCHEDULED CASTES, SCHEDULED TRIBES & LOW INCOME GROUPS
PERCENTAGE TO TOTAL ENROLMENT
1950-51
21·9%
1951-52
24·6%
1952-53
25·5%
1953-54
26·8%
1954-55
29·0%
1955-56
30·2%
1956-57
29·5%
1957-58
28·7%
1958-59
32·4%
1959-60
34·5%
1960-61
32·8%
1961-62
35·7%
1962-63
35·4%
1963-64
ESTIMATED
35·9%
IN CRORES
0
1
2
3
4
5
6
7

तकनीकी शिक्षा की प्रगति, 1961—66

PROGRESS OF TECHNICAL EDUCATION, 1961—66

इस चार्ट में तीसरी पंचवर्षीय योजना में तकनीकी शिक्षा में हुई प्रगति को दिखाया गया है।

तकनीकी शिक्षा का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए तीसरी पंच-वर्षीय योजना की अवधि में संस्थाओं की संख्या में वृद्धि करके, वर्तमान संस्थाओं की प्रवेश-क्षमता को बढ़ाकर और अच्छे सामान तथा योग्य शिक्षकों आदि की व्यवस्था करके डिग्री और डिप्लोमा स्तरों पर प्रशिक्षण की अधिक सुविधाएं प्रदान करने के प्रयत्न किए गए। इसके फलस्वरूप डिग्री संस्थाओं की संख्या में 22 (19.8 प्रतिशत) और डिप्लोमा संस्थाओं में 65 (31.1 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। डिग्री पाठ्यक्रमों की प्रवेश क्षमता 56 प्रतिशत बढ़ी अर्थात 1961-62 में जो 15,850 थी वह 1965-66 में 24,695 हो गई और डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की प्रवेश क्षमता में 74 प्रतिशत वृद्धि हुई अर्थात् 1961-62 में जो 27,701 थी वह 1965-66 में 48,108 हो गई।

This chart shows the progress of techni education during the third Five-Y Plan.

Technical education plays an import role in the economic development of t country. Keeping this fact in view steps w taken during the third Five-Year Plan provide greater training facilities both at t degree and at the diploma levels, by incre ing the number of institutions, enlarging t intake capacity of existing institutions and providing better equipment and qualified sta As a result of these measures, the number degree institutions increased by 22 (19·8 p cent) and diploma institutions by 65 (31 per cent). The intake capacity has increas by 56 per cent—from 15,850 in 1961-62 24,695 in 1965-66—for the degree cours and by 74 per cent—from 27,701 in 1961- to 48,108 in 1965-66—for diploma courses.

PROGRESS OF TECHNICAL EDUCATION

INSTITUTIONS

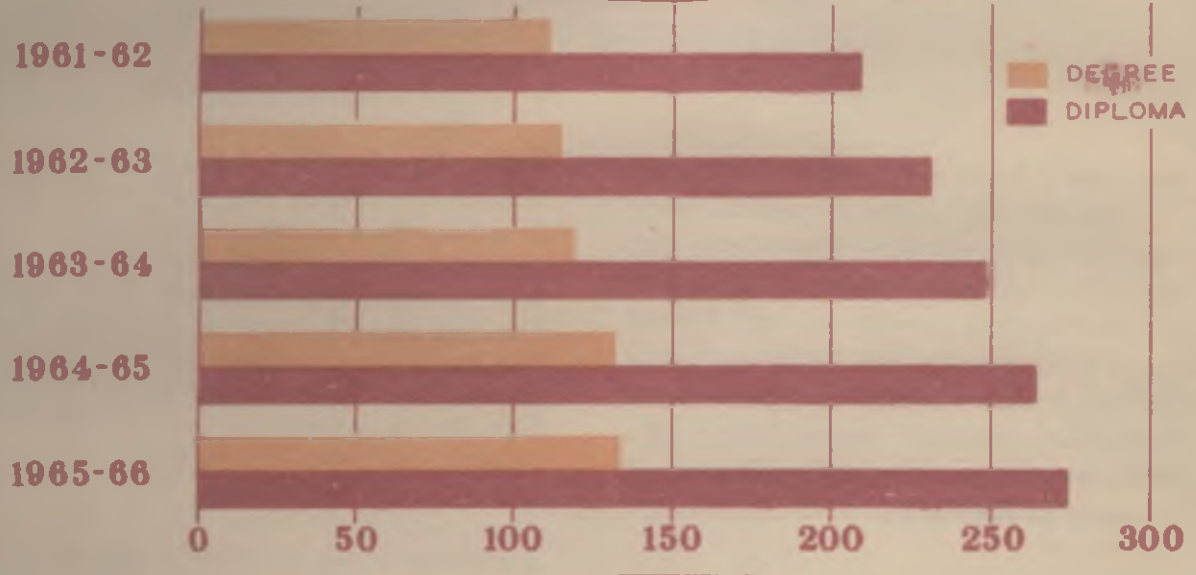

INTAKE

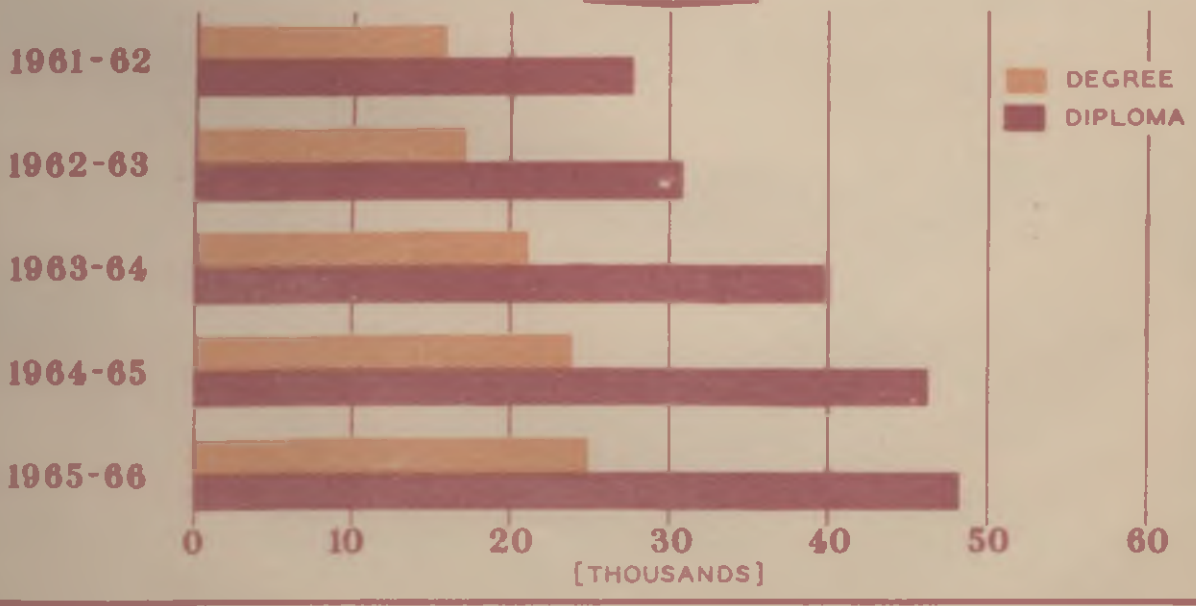

योजनागत स्कीमों का परिव्यय

OUTLAY UNDER PLAN SCHEMES

इस चार्ट में शिक्षा के क्षेत्रों के अनुसार तीन पंचवर्षीय योजनाओं के शिक्षा परिव्यय का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रथम योजना में कुल परिव्यय 153 करोड़ था जिसके मुकाबले में दूसरी योजना में यह 256 करोड़ और तीसरी योजना में 560 करोड़ था। पहली योजना की तुलना में तीसरी योजना के परिव्यय में अधिकतम वृद्धि इंजीनियरी और प्रोद्योगिकी की शिक्षा में और दूसरे स्थान पर विश्वविद्यालयी शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा में हुई। प्रारंभिक शिक्षा तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों में परिव्यय की मात्रा दुगनी से अधिक रही है।

This chart gives a comparative study of the outlay on education in the three Five-Year Plans by sectors of education. The total outlay in the First Plan was Rs. 153 crore, as against Rs. 256 crore in the Second Plan and Rs. 560 crore in the Third Plan. The maximum percentage increase in outlay in the Third Plan as compared to the First Plan was in engineering and technological education followed by university education and secondary education. The outlay on elementary education as well as other programmes of education has more than doubled.

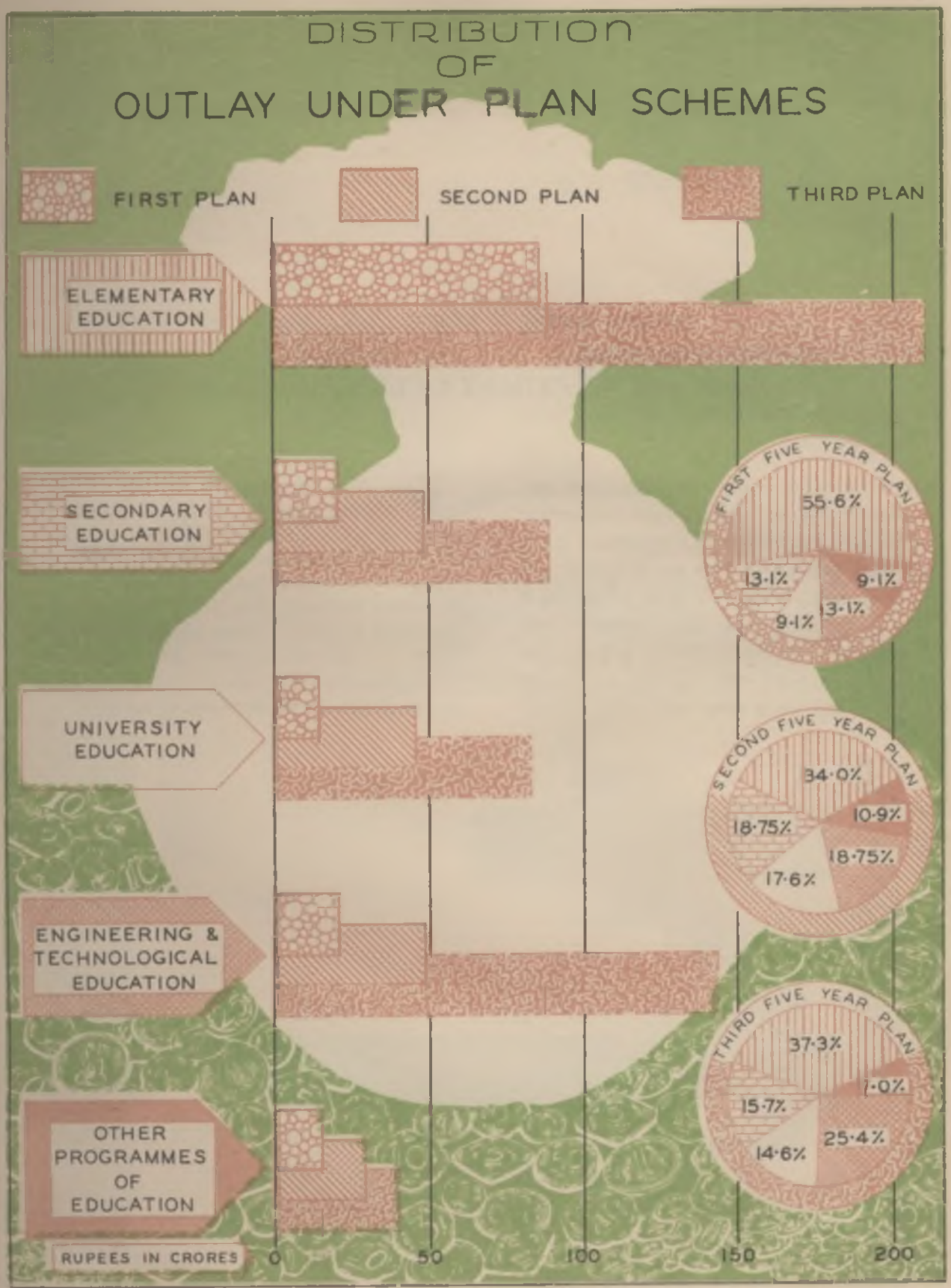
DISTRIBUTION
OF
OUTLAY UNDER PLAN SCHEMES
FIRST PLAN
SECOND PLAN
THIRD PLAN
ELEMENTARY EDUCATION
SECONDARY EDUCATION
UNIVERSITY EDUCATION
ENGINEERING & TECHNOLOGICAL EDUCATION
OTHER PROGRAMMES OF EDUCATION
RUPEES IN CRORES
0
50
100
150
200
FIRST FIVE YEAR PLAN
55·6%
13·1%
9·1%
9·1%
13·1%
SECOND FIVE YEAR PLAN
34·0%
10·9%
18·75%
18·75%
17·6%
THIRD FIVE YEAR PLAN
37·3%
7·0%
15·7%
25·4%
14·6%

प्राथमिक कक्षाओं में अपव्यय, 1958—1963

WASTAGE AT PRIMARY CLASSES, 1958—63

इस चार्ट में यह दिखाया गया है कि 1958-59 में पहली कक्षा में लिए गए बच्चों में से कितने बच्चे प्राथमिक स्तर की अवधि में स्कूल छोड़ गए हैं। पहली कक्षा में दाखिल किए गए सौ बच्चों में से 40 दूसरी कक्षा में पहुंचने से पहले, 11 तीसरी कक्षा में पहुंचने से पहले, 7 चौथी कक्षा में पहुंचने से पहले और 5 पांचवीं कक्षा में पहुंचने से पहले स्कूल छोड़ गए हैं। इस प्रकार सौ में से 63 बच्चे पांच साल की अवधि के पूरा होने से पहले स्कूल छोड़ गए जो स्थायी साक्षरता के लिए न्यूनतम समझी जाती है।

This chart depicts the wastage at the primary stage for the batch of children admitted in Class I during 1958-59. Of every hundred children who entered the schools in Class I, 40 dropped before reaching Class II, 11 before reaching Class III, 7 before reaching Class IV and 5 before reaching Class V. Thus, 63 children dropped out before completing the five years' course which is regarded as the minimum for permanent literacy.

WASTAGE AT PRIMARY CLASSES

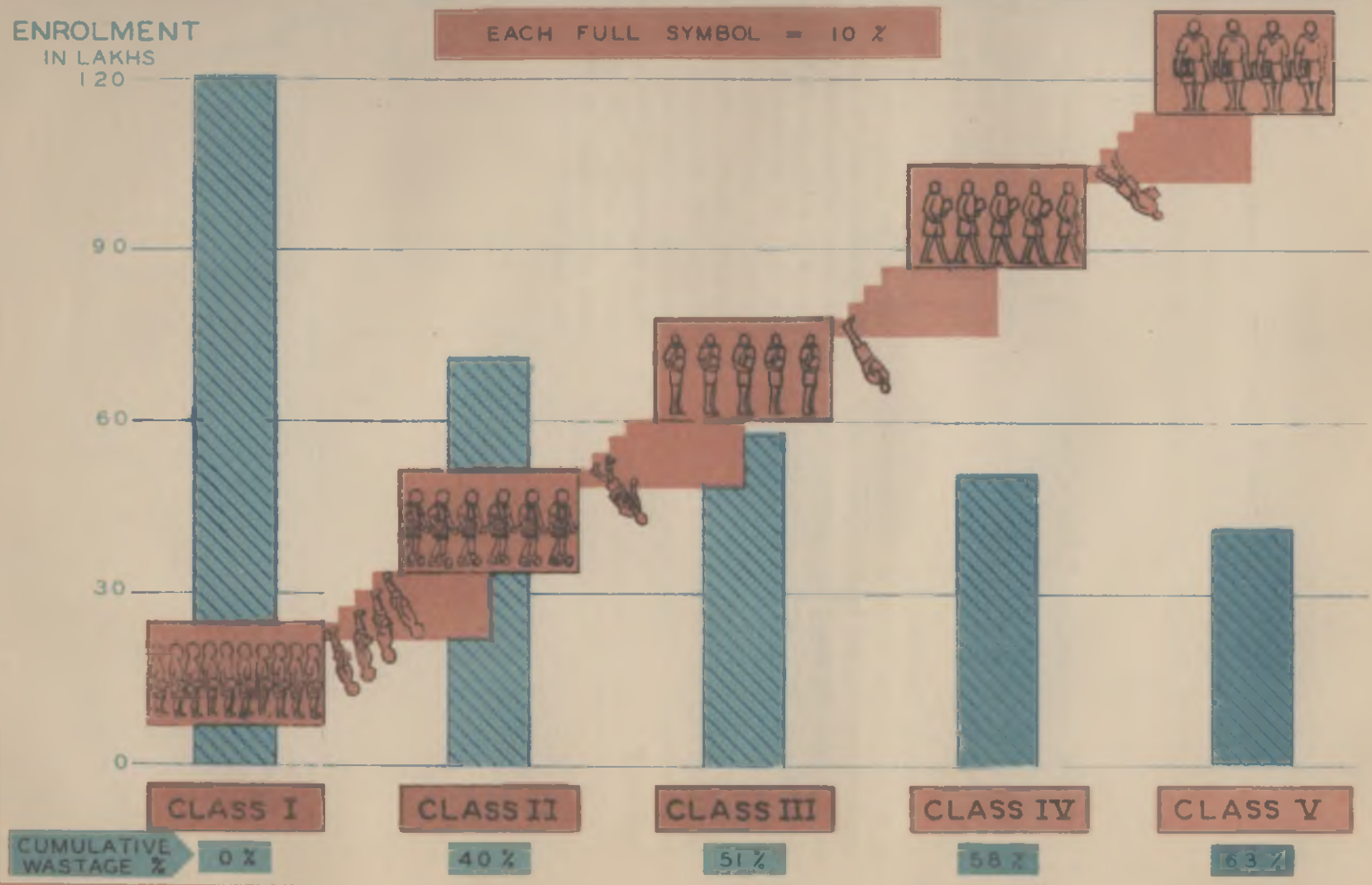

राज्यों के शिक्षा-बजट, 1965-66

STATE EDUCATIONAL BUDGET, 1965-66

इस चार्ट में यह दिखाया गया है कि राज्य सरकारों द्वारा (नागालैंड को छोड़कर) शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए बजट में कितनी राशि की व्यवस्था की गई थी और वह राशि कुल बजट का कितना प्रतिशत थी।

उत्तर प्रदेश ने शिक्षा के लिए सबसे अधिक राशि नियत की थी, उसके बाद मद्रास, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश का स्थान आता है। कुल बजट के प्रतिशत आंकड़ों की दृष्टि से शिक्षा के लिए सबसे अधिक राशि केरल ने (33.9 प्रतिशत) नियत की। आंध्र प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, मद्रास, मैसूर और राजस्थान ने बजट के 20-30 प्रतिशत तक की राशि नियत की। जम्मू और काश्मीर ने सबसे कम (13.3 प्रतिशत) राशि शिक्षा के लिए नियत की। औसतन, 1965-66 में राज्यों के बजट का 21·1 प्रतिशत शिक्षा के लिए नियत किया गया है।

The chart opposite gives the func vided in the budget by the State G ments (excluding Nagaland) for the levels of education and their propor the respective total budgets.

Uttar Pradesh earmarked the amount for education followed by M Maharashtra and Madhya Pradesh. percentage of the total budget, the l allocation was made in Kerala, where per cent of the budget was allocate education. Andhra Pradesh, Bihar, M Pradesh, Madras, Mysore and Raj allocated 20—30 per cent of their budg education. Jammu and Kashmir mad least percentage allocation for edu (13·3 per cent). On an average, 21· cent of the budget of States was earm for education in 1965-66.

STATE EDUCATIONAL BUDGET

1965-66

PERCENTAGE OF EDUCATIONAL BUDGET TO THE TOTAL BUDGET

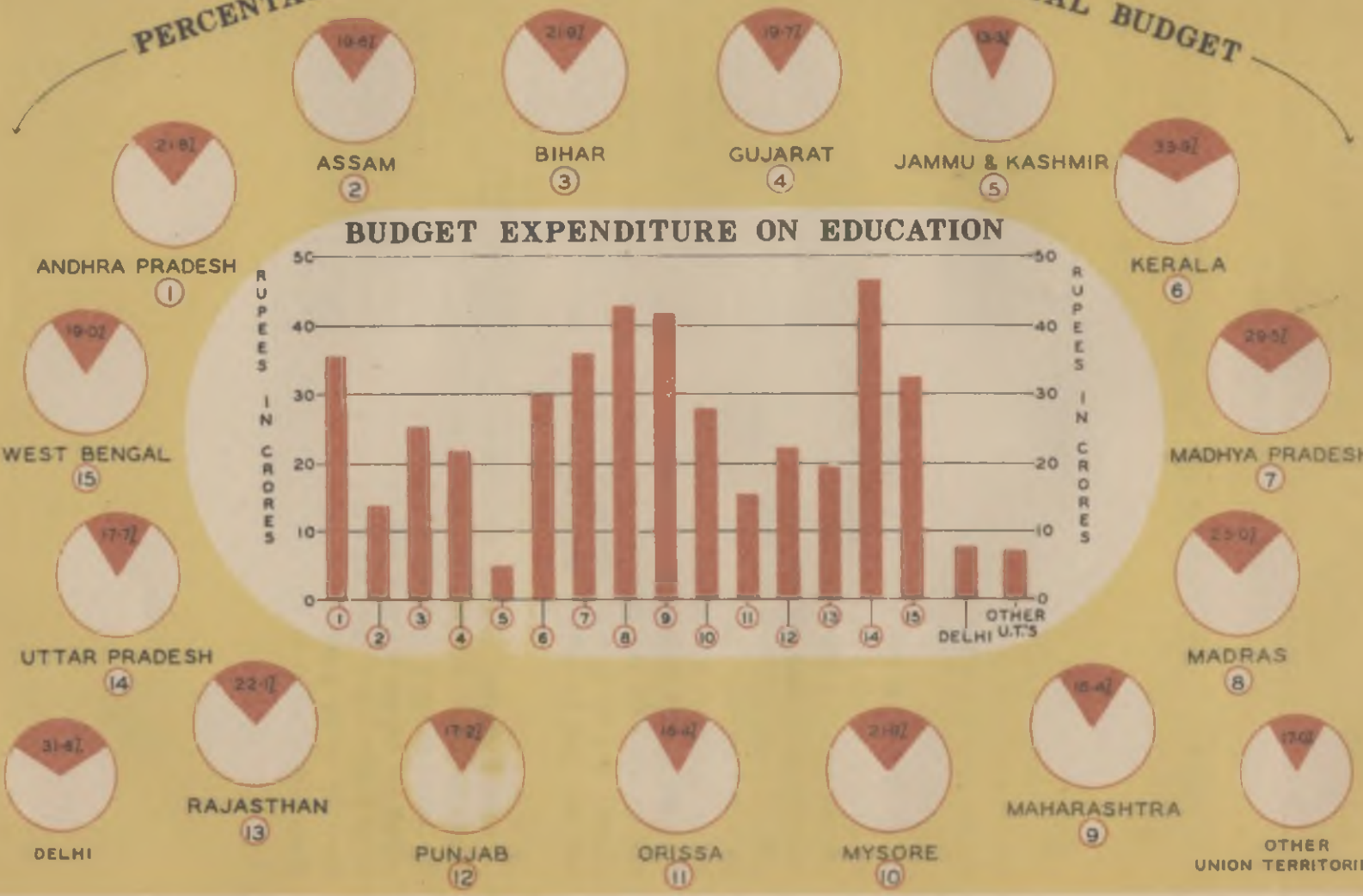

शिक्षा-व्यय, 1962-63

EXPENDITURE ON EDUCATION, 1962-63

इस चार्ट में यह दिखाया गया है कि भारत के विभिन्न राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों में शिक्षा पर कुल कितना खर्च किया गया और इस खर्च का कितना अंश किन-किन स्रोतों से प्राप्त हुआ।

जहां तक कुल खर्च का संबन्ध है महाराष्ट्र का स्थान सबसे ऊपर है जिस पर 5,687.2 लाख रुपये खर्च हुए। इसके बाद उत्तर प्रदेश (5,040.8 लाख रुपये) व मद्रास (4,396·9 लाख रुपये) आते हैं। सबसे कम राशि दादरा और नगर हवेली (3·8 लाख रुपये) ने खर्च की। किंतु प्रति व्यक्ति खर्च दिल्ली में सबसे अधिक (49 रुपये) रहा और इसके बाद लकादीव, मिनिकाय और अमीनदीवी द्वीप समूह (37 रुपये) और पांडिचेरी (34 रुपये) का स्थान आता है। सबसे कम प्रति व्यक्ति खर्च दादरा और नगर हवेली (5 रुपये) का है और उस के ऊपर क्रमशः बिहार (5·5 रुपये) तथा उड़ीसा (6 रुपये) का स्थान आता है।

सरकार ने लकादीव, मिनिकाय और अमीनदीवी द्वीपसमूह, नेफ़ा, दादरा और नगर हवेली तथा अंडेमान और निकोबार द्वीपसमूह में सारा खर्च दिया और त्रिपुरा, पांडिचेरी तथा जम्मू और काश्मीर के शिक्षा-व्यय का 90 प्रतिशत से अधिक दिया। अन्य राज्यों के शिक्षा-व्यय में सरकार का अंश 89.6 प्रतिशत (नागालैंड) से 14.4 प्रतिशत (हिमाचल प्रदेश) तक रहा।

The total expenditure on education in different States and Union Territor in India and the contribution of the differe sources towards this expenditure is depict in this chart.

As regards total expenditure, the State Maharashtra tops the list with an expen ture of Rs. 5687·2 lakh followed by Ut Pradesh (Rs. 5040·8 lakh) and Mad (Rs. 4396·9 lakh). The least amount w spent by Dadra and Nagar Haveli (Rs. 3 lakh). However, the per capita expenditu was the highest in Delhi (Rs. 49), follow by L. M. & A. Islands (Rs. 37) and Pon cherry (Rs. 34). The least per capita e penditure was incurred by Dadra and Nag Haveli (Rs. 5), followed by Bihar (Rs. 5·5 and Orissa (Rs. 6).

Government financed the total expenditu in L. M. & A. Islands, NEFA, Dadra a Nagar Haveli and A. & N. Islands and m more than Rs. 9 out of Rs. 10 spent education in Tripura, Pondicherry and Jamm & Kashmir. In the case of other States t Government contribution towards education expenditure varied from 89·6 per cent Nagaland to 14·4 per cent in Himach Pradesh.

EXPENDITURE ON EDUCATION
1962-63

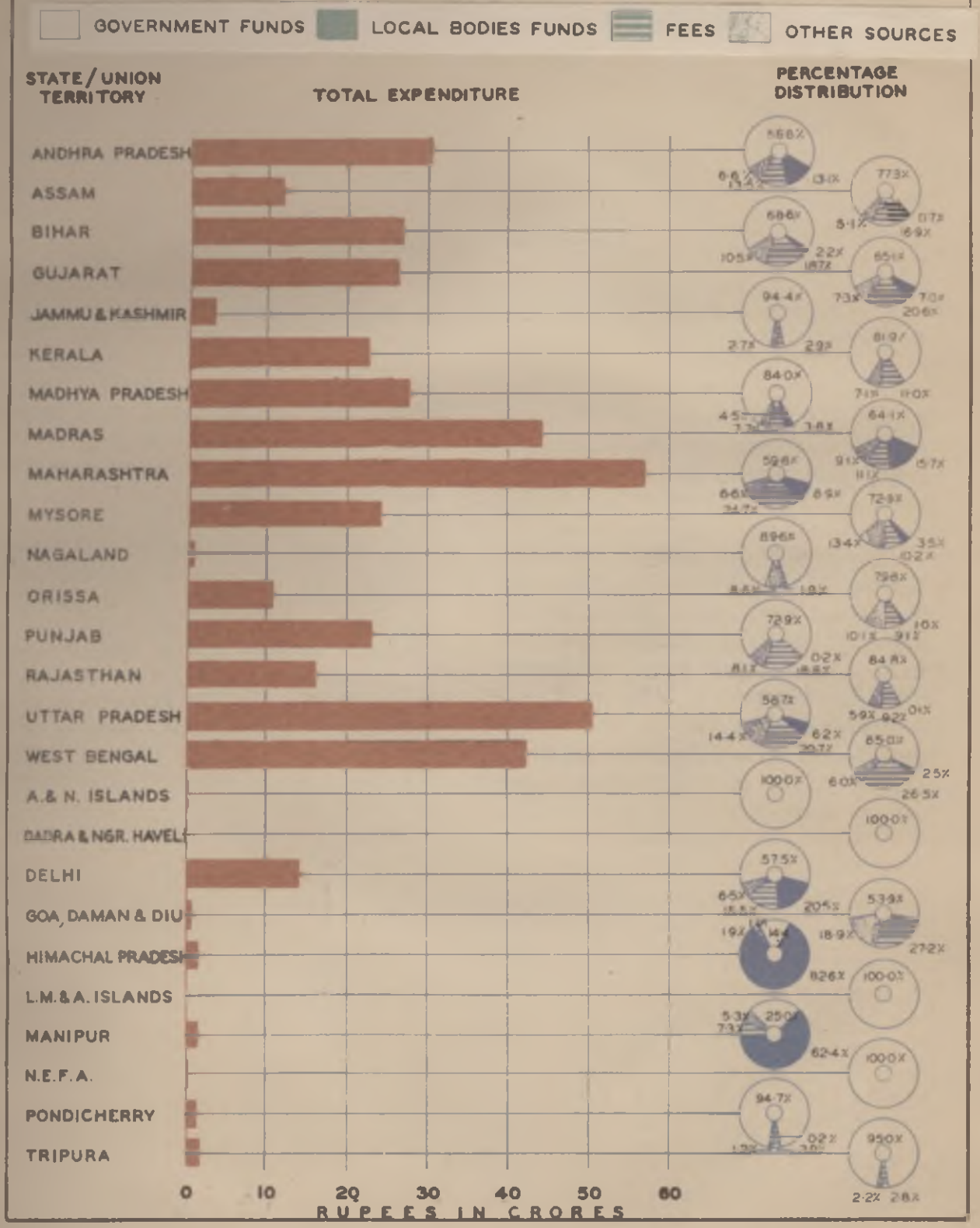

भारत में निःशुल्क शिक्षा, 1965

FREE EDUCATION IN INDIA, 1965

सामने के चार्ट में यह दिखाया गया है कि भारत के विभिन्न राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों में (नागालैंड को छोड़कर) किन-किन स्तरों तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

जम्मू और काश्मीर में कालेज स्तर तक की शिक्षा निःशुल्क है। शेष राज्यों में से पांच में आठवीं कक्षा तक, एक में ग्यारहवीं कक्षा तक और छः में पांचवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। उत्तर प्रदेश में लड़कों के लिए पांचवीं कक्षा तक और लड़कियों के लिए दसवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। पश्चिमी बंगाल में लड़कों को चौथी कक्षा तक और लड़कियों को आठवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। तीन संघ-शासित क्षेत्रों में ग्यारहवीं कक्षा तक और शेष में आठवीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है।

The chart opposite depicts the st to which education is free different States and Union Territories excluding Nagaland.

In Jammu & Kashmir education is to the college stage. Among the other in five education is free up to VIII c one it is free up to XI class and in s free up to V class. In Uttar Pradesh tion is free up to V class for boys and X class for girls. In West Bengal there education upto IV class for boys and class for girls. In three Union Ter education is free up to XI class and in up to VIII class.

FREE EDUCATION IN INDIA, 1965

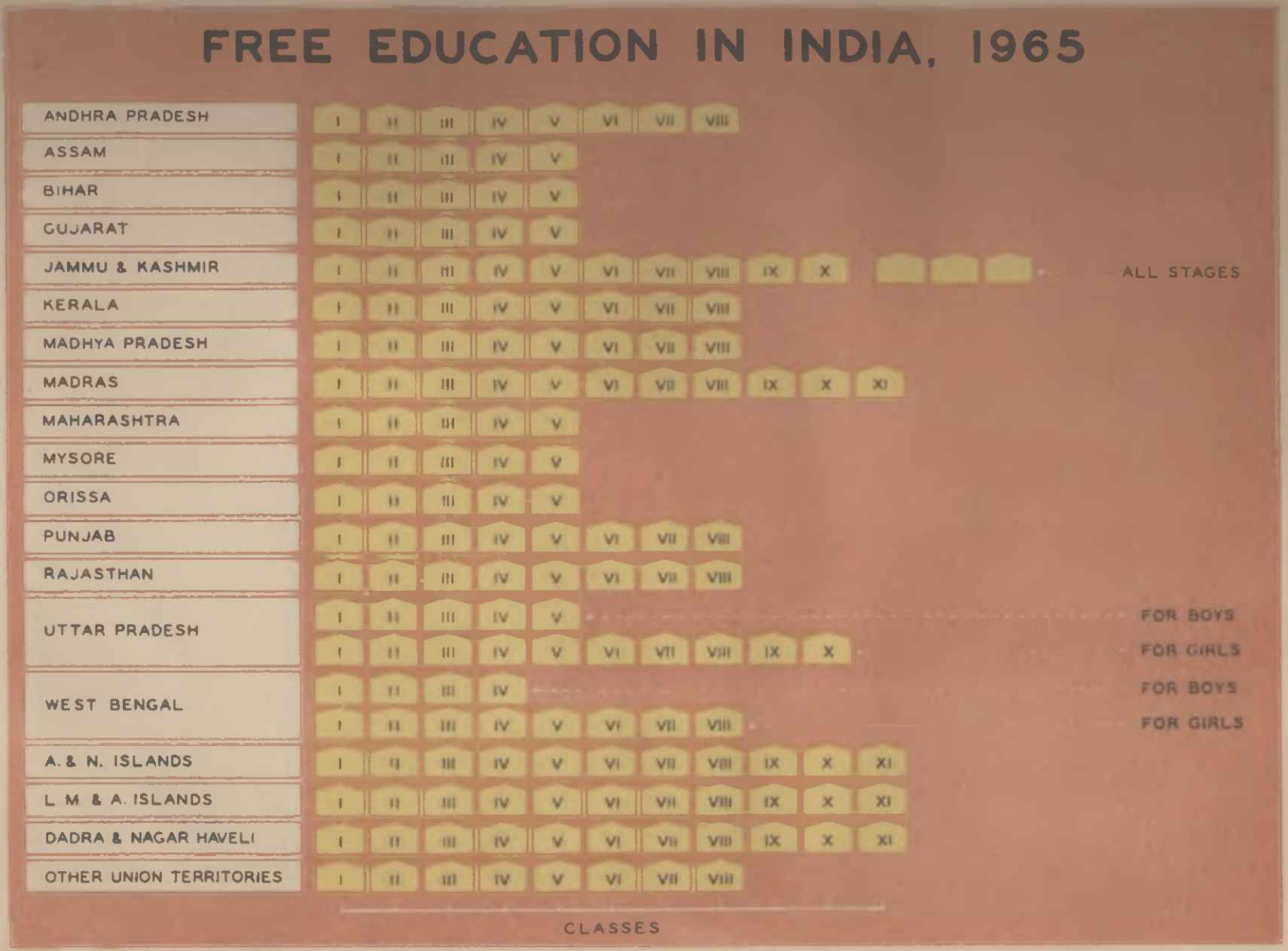

भारत में अनिवार्य शिक्षा, 1962-63

COMPULSORY EDUCATION IN INDIA, 1962-63

भारतीय संविधान के आदेशानुसार सभी राज्यों को 14 वर्ष तक सभी बच्चों के लिए निःशुलक, अनिवार्य और सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। विभिन्न राज्यों ने विभिन्न आयु तक के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य की है। इस चार्ट में 1962-63 की स्थिति दिखाई गई है ।

नगर-क्षेत्रों में 2 राज्यों ने 10 वर्ष तक, 9 राज्यों ने 11 वर्ष तक, एक राज्य ने 12 वर्ष तक और शेष राज्यों ने 14 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की है। केवल एक राज्य में 8 वर्ष तक और एक में 9 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा रखी गई है। देहाती क्षेत्रों में एक राज्य में 14 वर्ष तक, 9 राज्यों में 11 वर्ष तक और एक राज्य में 10 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था है। केवल एक राज्य में 7 वर्ष तक, एक में 8 वर्ष तक और दो में 9 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा दी जाती है। अन्य राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों में अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था नहीं है ।

The constitution of India enjoins on the States to endeavour to provide free, compulsory and universal education for all children until they complete the age of 14 years. Different States have brought education under compulsion, up to different ages. The position in 1962-63 is presented in this chart.

In the urban areas, education was made compulsory upto 10 years in two States, upto 11 years in 9 States, upto 12 years in one State and upto 14 years in another. Compulsory education was upto 8 years of age only in one State and upto 9 years in another one. In the rural areas compulsory education was introduced upto 14 years in one State, upto 11 years in 9 States and upto 10 years in one State. It was introduced only upto 7 years and 8 years in one State each and upto 9 years in another two States. Compulsory education was not in vogue in other States and Union Territories.

COMPULSORY EDUCATION IN INDIA

AGE-GROUP UNDER COMPULSION

1962-63

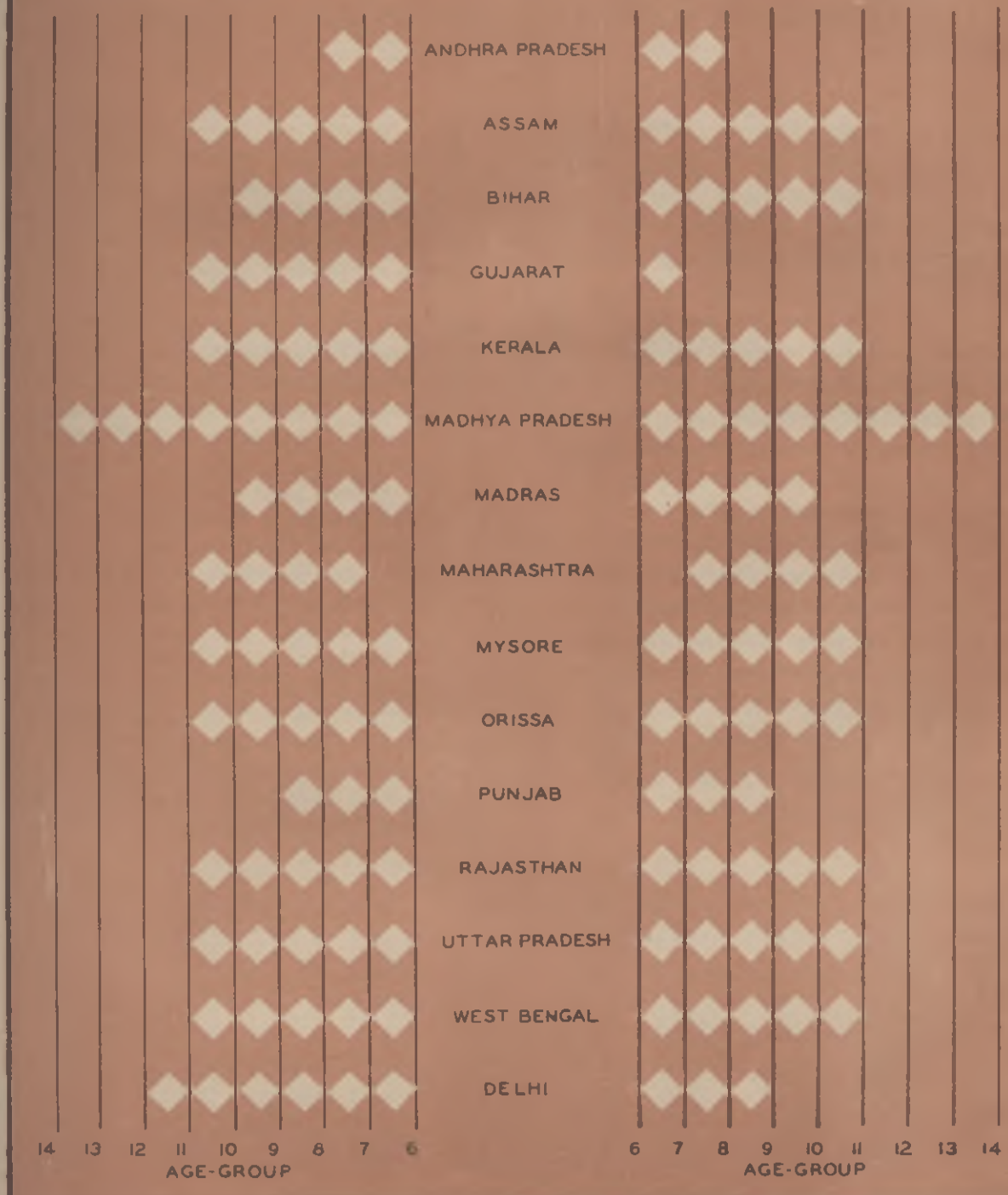

भारत में स्कूल-कक्षाओं की योजना, 1963-64

SCHEME OF SCHOOL CLASSES IN INDIA, 1963-64

प्राथमिक, मिडिल और हाई/उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर कक्षाओं की संख्या की दृष्टि से सभी राज्यों में एकरूपता नहीं पाई जाती है। कुछ राज्यों में तो क्षेत्रगत भिन्नता भी पाई जाती है। 1963-64 में प्राथमिक स्तर की अवधि आम तौर पर पांच वर्ष की थी, कुछ राज्यों में यह अवधि चार वर्ष की और एक राज्य में सात वर्ष की थी। मिडिल स्तर पर अधिकांश राज्यों में तीन कक्षाएं और अन्य राज्यों में दो अथवा चार कक्षाएं होती थी। प्राथमिक और मिडिल स्तर दोनों की अवधि मिला कर बिहार, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, दादरा और नगर हवेली तथा लकादीव मिनिकांय और अमीदीवी द्वीपसमूह में सात वर्ष की, मणिपुर में दस वर्ष की और शेष सभी राज्यों में आठ वर्ष की होती थी। हाई स्कूल/उच्चतर माध्यमिक स्तर में जो स्कूली शिक्षा की अंतिम कड़ी है अधिकांश राज्यों में तीन कक्षाएं होती थीं और कुछ में इस की अवधि 2 या 4 वर्ष भी होती थी सारे स्कूल-पाठ्यक्रम की अवधि चार राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में दस वर्ष की, पन्द्रह राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों में ग्यारह वर्ष की, पांच राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में बारह वर्ष की और दो राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में तेरह वर्ष की थी।

The number of classes at th middle and high/higher stages in schools in India is not all the States. In some States it from region to region. During 19 duration of primary stage was g five years, in some States it was f one seven. The middle stage c three classes in most of the States or four classes in others. Primary a stages, taken together, comprised o year course in all the States with the of Bihar, Gujarat, Kerala, Ma Mysore, Orissa, Dadra & Nagar H L. M. & A. Islands where these seven years and Manipur where th ten years. The high/higher second which is the final step in the ladder education, consisted of three cl majority of the States, while in oth tended over two or four years. T school course was covered in ten y States/Union Territories, eleven ye States/Union Territories, twelve yea States/Union Territories and thirte in 2 States/Union Territories.

SCHEME OF SCHOOL CLASSES IN INDIA
1963-64

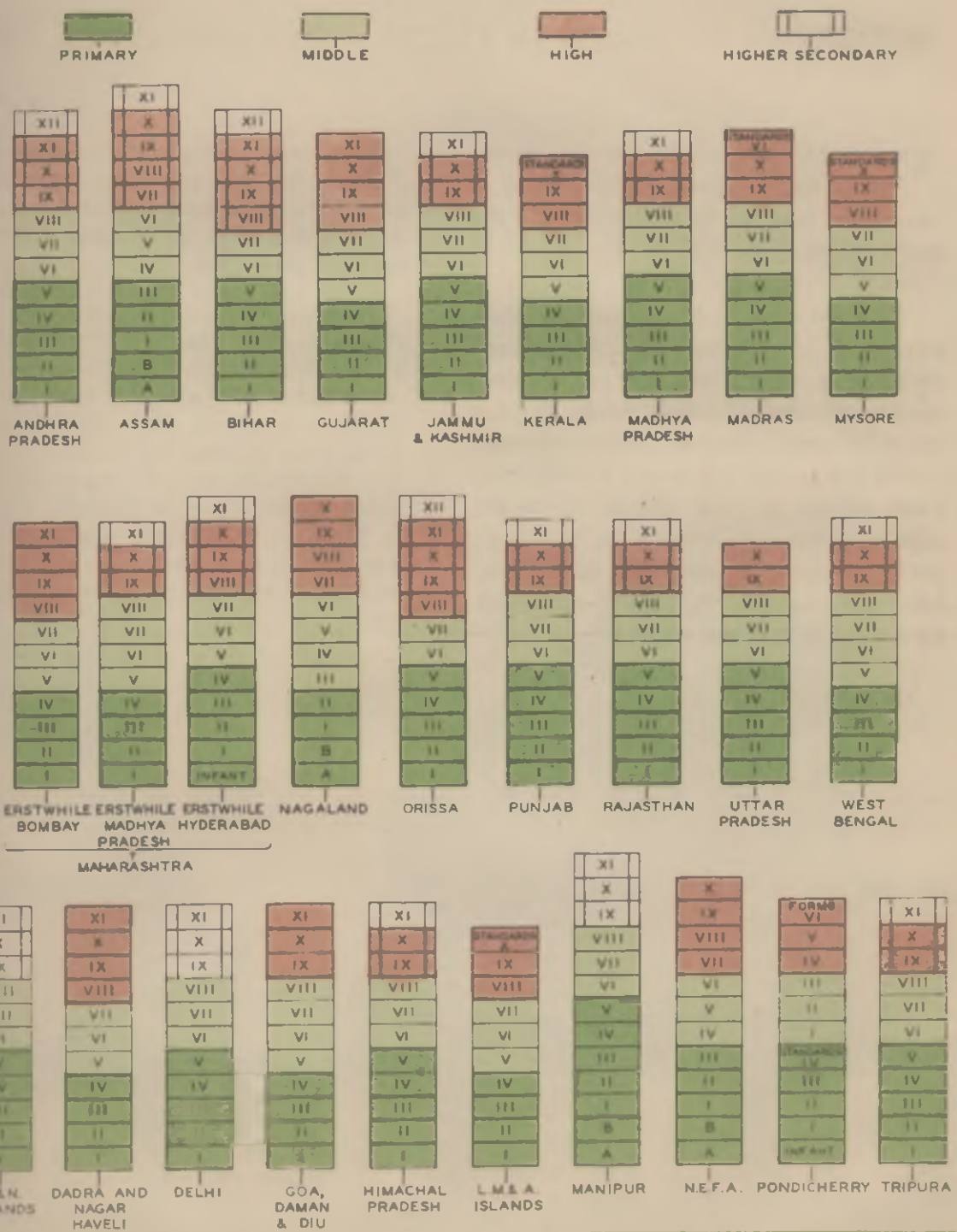

राज्यों तथा संघ-शासित क्षेत्रों में विद्यार्थियों की संख्या, 1965-66

NUMBER OF STUDENTS IN STATES AND TERRITORIES, 1965-66

इस चार्ट में दिखाया गया है कि प्रत्येक राज्य और संघ-शासित क्षेत्रों की सभी प्रकार की शिक्षा-संस्थाओं में 1965-66 में विद्यार्थियों की संख्या कितनी रही है और वह कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत थी।

कुल आंकड़ों की दृष्टि से विद्यार्थी संख्या सबसे अधिक उत्तर प्रदेश में (94.6 लाख) थी, उसके बाद क्रमशः महाराष्ट्र (79.0 लाख) और मद्रास (65.8 लाख) आते हैं। सबसे कम विद्यार्थी संख्या नागालैंड की (0.8 लाख) थी और इसके बाद जम्मू और काश्मीर (4.6 लाख) का स्थान आता है। प्रत्येक 100 व्यक्तियों में से शिक्षा संस्था में भर्ती व्यक्तियों की संख्या लकादीव, मिनिकाय और अमीनदीवी द्वीपसमूह में 28, मणिपुर में 26, दिल्ली में 24 और केरल में 22 थी। विद्यार्थी संख्या की प्रतिशतता नेफा में सबसे कम (4) थी और उसके बाद राजस्थान तथा उड़ीसा (10) का स्थान आता है।

This chart indicates the number of pupils enrolled in educational institutions of all types in each State and Territory in 1965-66, together with the percentage enrolment to total population.

In absolute figures, the enrolment was the highest in Uttar Pradesh (94·6 lakh) followed by Maharashtra (79·0 lakh) and Madras (65·8 lakh) and was the least among the States in Nagaland (0·8 lakh) followed by Jammu and Kashmir (4·6 lakh). For every 100 people, 28 were enrolled in some educational institutions in L. M. & A. Islands, 26 in Manipur, 24 in Delhi and 22 in Kerala. The percentage enrolment was the least in NEFA (4) followed by Rajasthan and Orissa (10).

NUMBER OF STUDENTS IN STATES AND TERRITORIES 1965-66

(ESTIMATED)

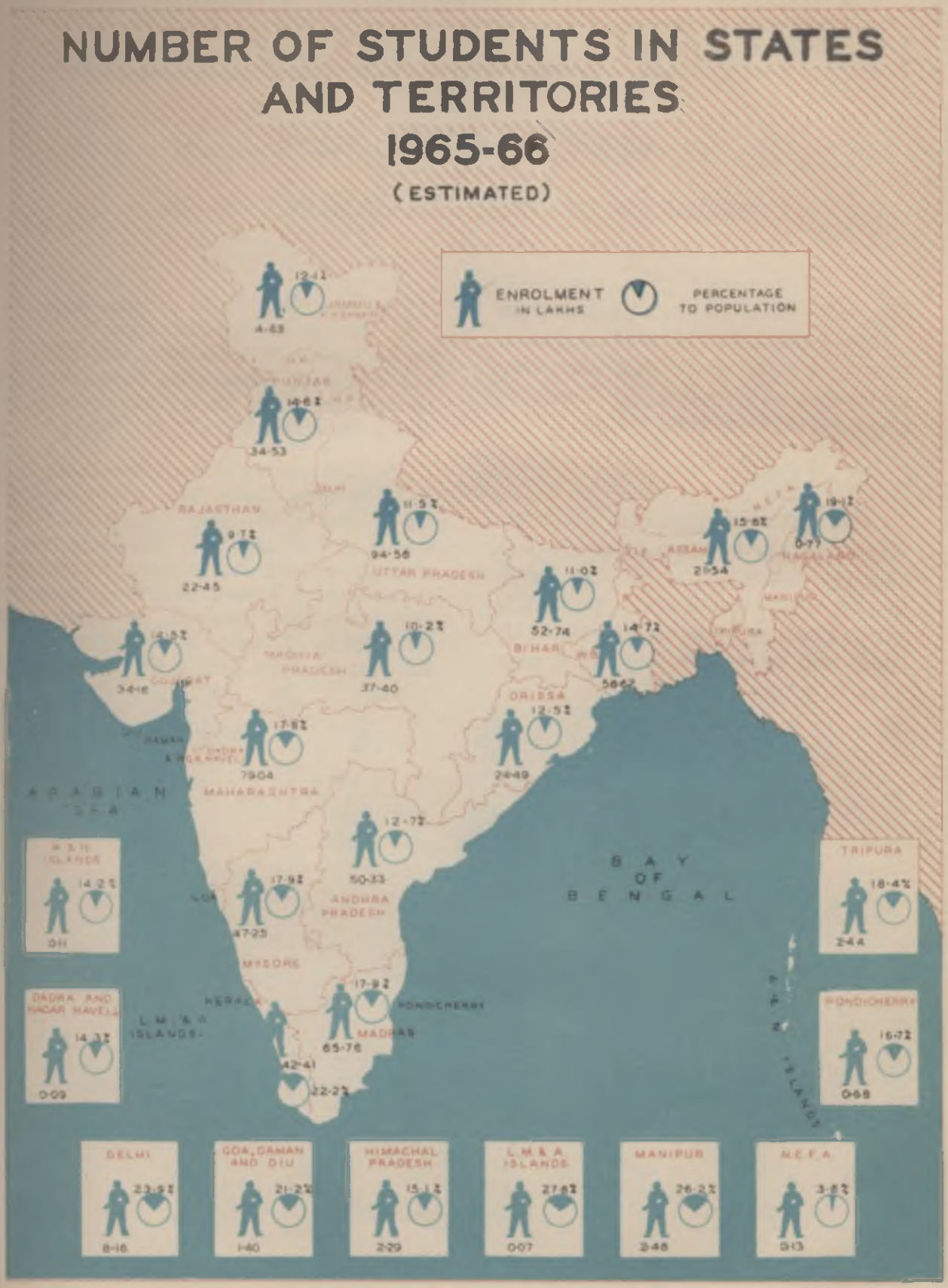

बुनियादी शिक्षा की प्रगति, 1950—66

PROGRESS OF BASIC EDUCATION, 1950—66

इस चार्ट का विषय 1950-51 से 1965-66 के बीच बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति है। इसमें दिखाया गया है कि इस अवधि में जूनियर बेसिक, सीनियर बेसिक और बेसिकोत्तर स्कूलों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की संख्या क्या थी और उन पर कितना खर्च हुआ।

बेसिक स्कूलों की कुल संख्या चार गुणा बढ़ी—सीनियर बेसिक स्कूलों की संख्या में 49 गुणा वृद्धि हुई और जूनियर बेसिक स्कूलों की संख्या में 3.6 गुणा। कुल विद्यार्थी-संख्या तथा अध्यापक-संख्या में क्रमशः 6 गुणा और 5.5 गुणा वृद्धि हुई और उन पर हुआ व्यय 12 गुणा बढ़ा। प्रति विद्यार्थी खर्च इस अवधि में 14.2 रु० से बढ़कर 28.1 रु० हो गया।

This chart depicts the progress made in the field of Basic education, by showing the number of Junior Basic, Senior Basic and Post-Basic schools, the enrolment and teachers therein and the expenditure on them during the period 1950-51 to 1965-66.

The total number of Basic schools increased by 4 times—Senior Basic schools recording a rise by 49 times and Junior Basic schools by 3·6 times only. The total number of pupils enrolled and teachers increased by 6 times and 5·5 times respectively, whereas the expenditure incurred on them has increased by 12 times. The cost per student has risen from Rs. 14·2 to Rs. 28·1, in this period.

PROGRESS OF BASIC EDUCATION
IN INDIA

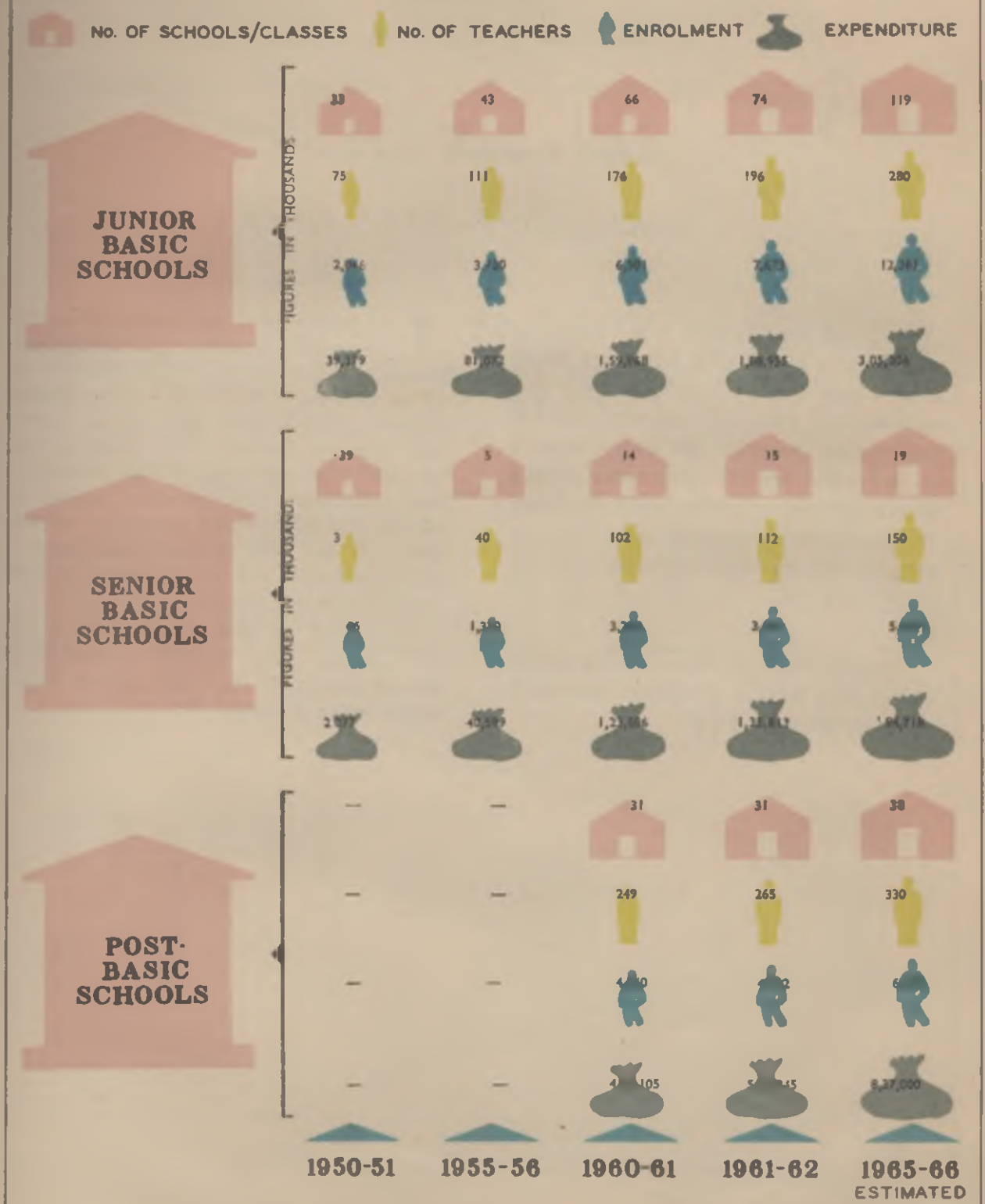

स्कूलों में अध्यापक, 1965-66

TEACHERS IN SCHOOLS, 1965-66

इस चार्ट में यह दिखाया गया है कि 1965-66 की अवधि में इस देश में प्राथमिक, मिडिल, हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों की संख्या कितनी थी। अध्यापकों की 18.5 लाख की कुल अनुमानित संख्या में से आधे से कुछ कम पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूलों में थे। इन में प्राथमिक स्तर के वे अध्यापक सम्मिलित नहीं हैं जो मिडिल/हाई/उच्चतर माध्यामिक स्कूलों के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विभागों में काम करते थे। लगभग 30 प्रतिशत अध्यापक मिडिल स्कूलों में और शेष हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में थे।

कुल अध्यापकों में से 67 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षित हैं। तीनों प्रकार के स्कूलों में प्रशिक्षित अध्यापकों की प्रतिशत 65 और 70 के बीच है।

This chart depicts the number of teachers in primary, middle and high/higher secondary schools in the country in 1965-66. Of an estimated total of 18·5 lakh teachers, slightly less than half were in pre-primary and primary schools. This excludes the number of primary stage teachers working in the pre-primary and primary sections of middle and high/higher secondary schools. About 30 per cent of the teachers were in middle schools and the balance in high/higher secondary schools.

Sixty-seven per cent of the total number of teachers were trained. Percentage of trained teachers in the three types of schools varies between 65 and 70.

8,35,000

LIBRARY & DOCUMENTATION Centre
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-8695
DOC, No ....
Date............07-07-95

TEACHERS IN SCHOOLS

1965-66

[ESTIMATED]

EACH FULL SYMBOL = 50,000

TRAINED

UNTRAINED

PERCENTAGE OF TRAINED TEACHERS TO TOTAL NUMBER OF TEACHERS

PRE-PRIMARY & PRIMARY SCHOOL
(8,70,000)

MIDDLE SCHOOL
(5,50,000)

HIGH/ HIGHER SECONDARY SCHOOL
(4,30,000)

स्कूलों के प्रशिक्षित अध्यापक, वेतन तथा योग्यता के अनुसार, 1961

TRAINED SCHOOL TEACHERS BY SALARY AND QUALIF
1961-62

सामने के चार्ट में योग्यता, स्कूल के प्रकार और वार्षिक औसत वेतन के अनुसार प्रशिक्षित शिक्षकों का वर्गीकरण किया गया है ।

कुल 9.9 लाख प्रशिक्षित अध्यापकों में से 12.4 प्रतिशत स्नातक, 38.8 प्रतिशत मैट्रिक/इंटरमीडियेट पास और 48.9 प्रतिशत मैट्रिक से नीचे की योग्यता वाले थे। सौ अध्यापकों में से 52 प्राथमिक स्कूलों में, 26 मिडिल स्कूलों में और 22 हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में काम करते थे ।

अध्यापकों का औसत वार्षिक वेतन प्राथमिक स्कूलों में 914 रुपये से लेकर हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में 1,724 रुपये के बीच था ।

The chart opposite presents
tion of trained school
qualification, type of schools in
are working and the annual av
drawn.

Of a total of 9·9 lakh trai
12·4 per cent were graduates, 3
were matriculates/intermediates
per cent were non-matriculates.
100 teachers 52 were working
schools, 26 in middle schools
high/higher secondary schools.

The average annual salary d
from Rs. 914 in primary schools
in high/higher secondary schools

TRAINED SCHOOL TEACHERS BY SALARY AND QUALIFICATIONS

1961-62

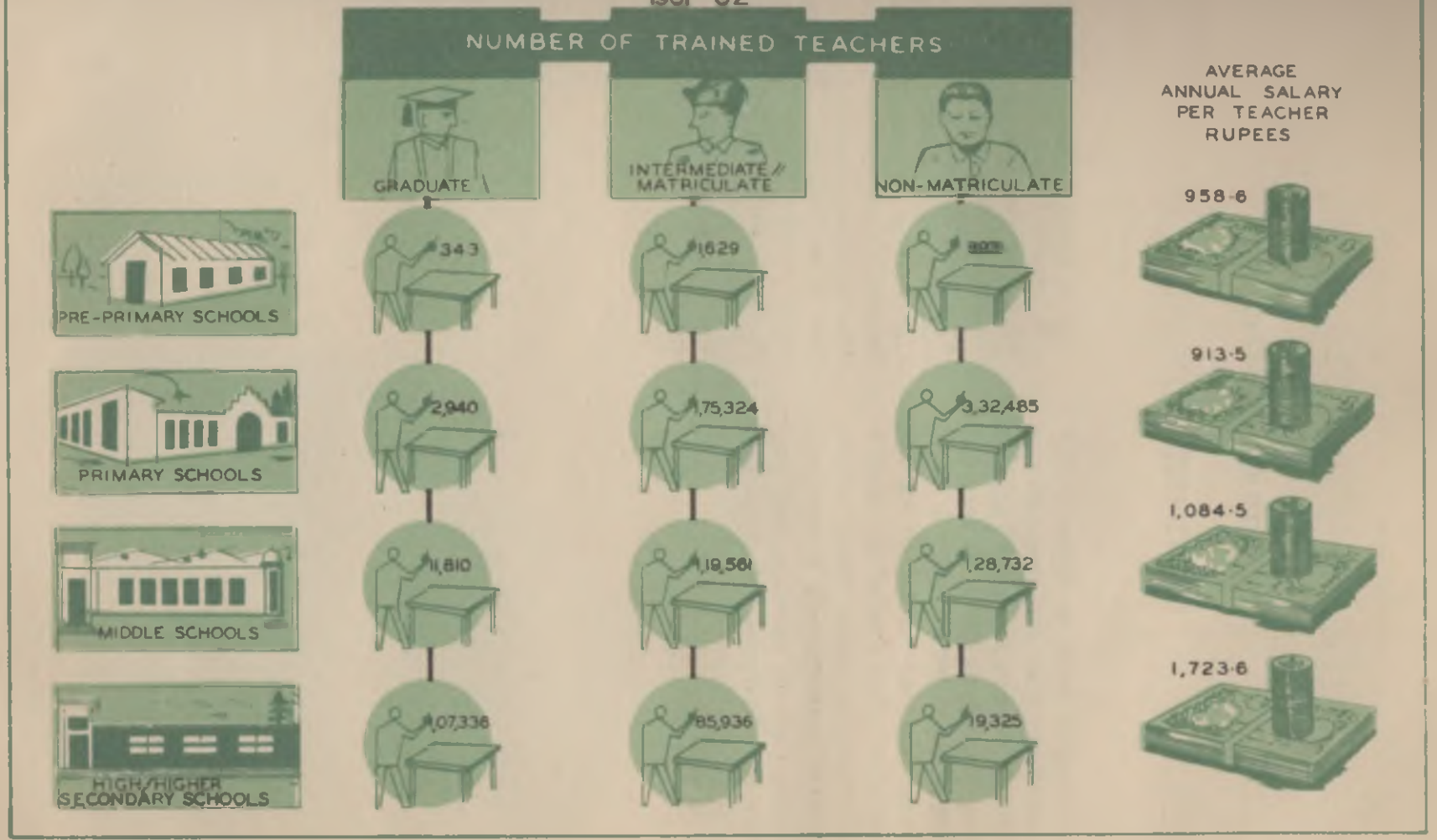

भारत के विश्वविद्यालय, 1965

UNIVERSITIES IN INDIA, 1965

शिक्षा की आधुनिक प्रणाली का श्रीगणेश इस देश में 1857 में हुआ था जब बम्बई, कलकत्ता और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी। 1965 में इस देश में 62 विश्वविद्यालय थे और 9 ऐसी संस्थाएं जिन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मान लिया गया है। इस चार्ट में इन विश्वविद्यालयों की स्थिति दिखाई गई है। इन में से उन्नीस विश्वविद्यालयों की स्थापना स्वाधीनता प्राप्ति से पहले हो चुकी थी। स्वातंत्र्योत्तर अवधि में विश्वविद्यालयी शिक्षा का विस्तार हुआ और 18 वर्षों की अवधि में 52 विश्वविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय मानी गई संस्थाओं की स्थापना हुई।

The modern system of education was started in this country with the establishment of the three universities of Bombay, Calcutta and Madras in 1857. In 1965 there were 62 universities and 9 institutions deemed to be universities under the University Grants Commission Act. This chart depicts the location of these universities. Nineteen of these universities were established prior to the attainment of independence. The post-independent period witnessed substantial expansion of university education and as many as 52 universities and "deemed to be" universities were established in the span of 18 years.

UNIVERSITIES IN INDIA

1965

विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के अध्यापक, 1962-63

TEACHERS IN UNIVERSITIES AND COLLEGES, 1962-63

इस चार्ट में विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के 62,141 अध्यापकों का वेतन-समूहों के अनुसार वर्गीकरण किया गया है । 71 प्रतिशत अध्यापक 100–400 रुपये प्रतिमास वेतन पा रहे थे । केवल 6.8 प्रतिशत अध्यापकों को 700 रुपये प्रतिमास से अधिक वेतन मिलता था । इनके अतिरिक्त 5,353 अध्यापक अवैतनिक या अंशकालिक आधार पर काम कर रहे थे ।

The distribution of 62,141 teachers in universities and colleges by salary groups is shown in this chart. 71 per cent of the teachers were drawing a salary of Rs. 100—400 only per month. Only 6·8 per cent of the teachers were drawing more than Rs. 700 per month. Apart from these, there were 5,353 teachers working on honorary or part-time basis.

TEACHERS IN UNIVERSITIES AND COLLEGES

1962-63

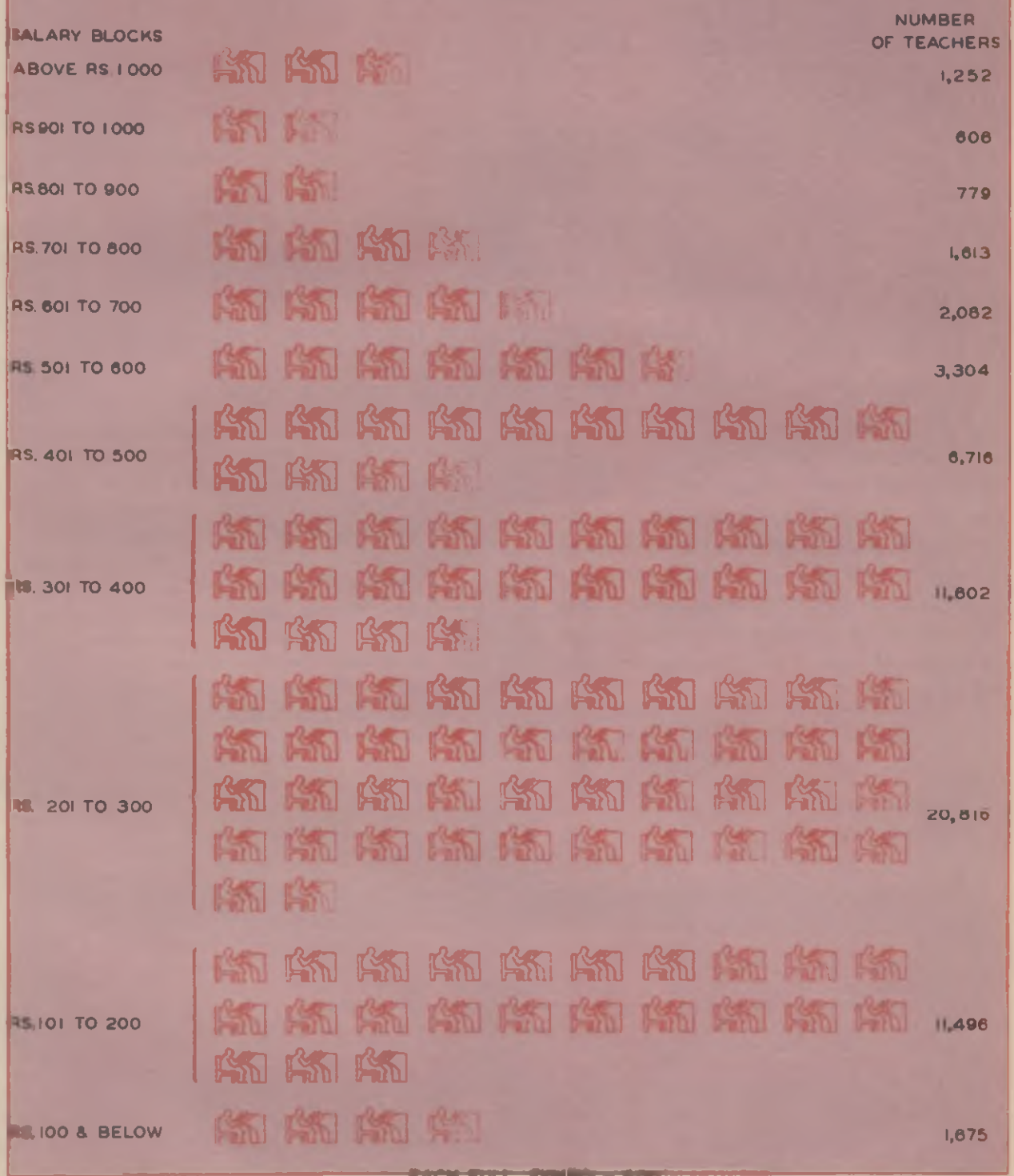

स्नातकों की संख्या, 1951—62

OUTPUT OF GRADUATES, 1951—62

इस चार्ट में 1951-52 से 1961-62 तक उन विद्यार्थियों की संख्या में हुई वृद्धि को दिखाया गया है जिन्होंने कला, विज्ञान तथा महत्वपूर्ण व्यवसायिक तथा तकनीकी विषयों में स्नातक-डिग्री प्राप्त की है। इस अवधि में स्नातकों की संख्या लगातार बढ़ी है। कला, इंजीनियरी और प्रोद्योगिकी, अध्यापक-प्रशिक्षण, आयुर्विज्ञान, कृषि और वन पालन, पशु चिकित्सा विज्ञान और शारीरिक शिक्षा में स्नातकों की संख्या तीन गुणा हो गई। विज्ञान और वाणिज्य के क्षेत्र में स्नातकों की संख्या 2–3 गुणा बढ़ी और कानून में यह वृद्धि केवल 1·5 गुणा हुई।

This chart traces the growth in the number of students who obtained Bachelor's degree in Arts, Science and important professional and technical subjects from 1951-52 to 1961-62. The output of graduates has steadily increased during the period. In Arts, Engineering and Technology, Teachers' Training, Medicine, Agriculture and Forestry, Veterinary Science and Physical Education, the number of students has increased more than three-fold. In the case of Science and Commerce, the out-put has increased 2-3 times. In Law the increase is only 1·5 times.

OUTPUT OF GRADUATES

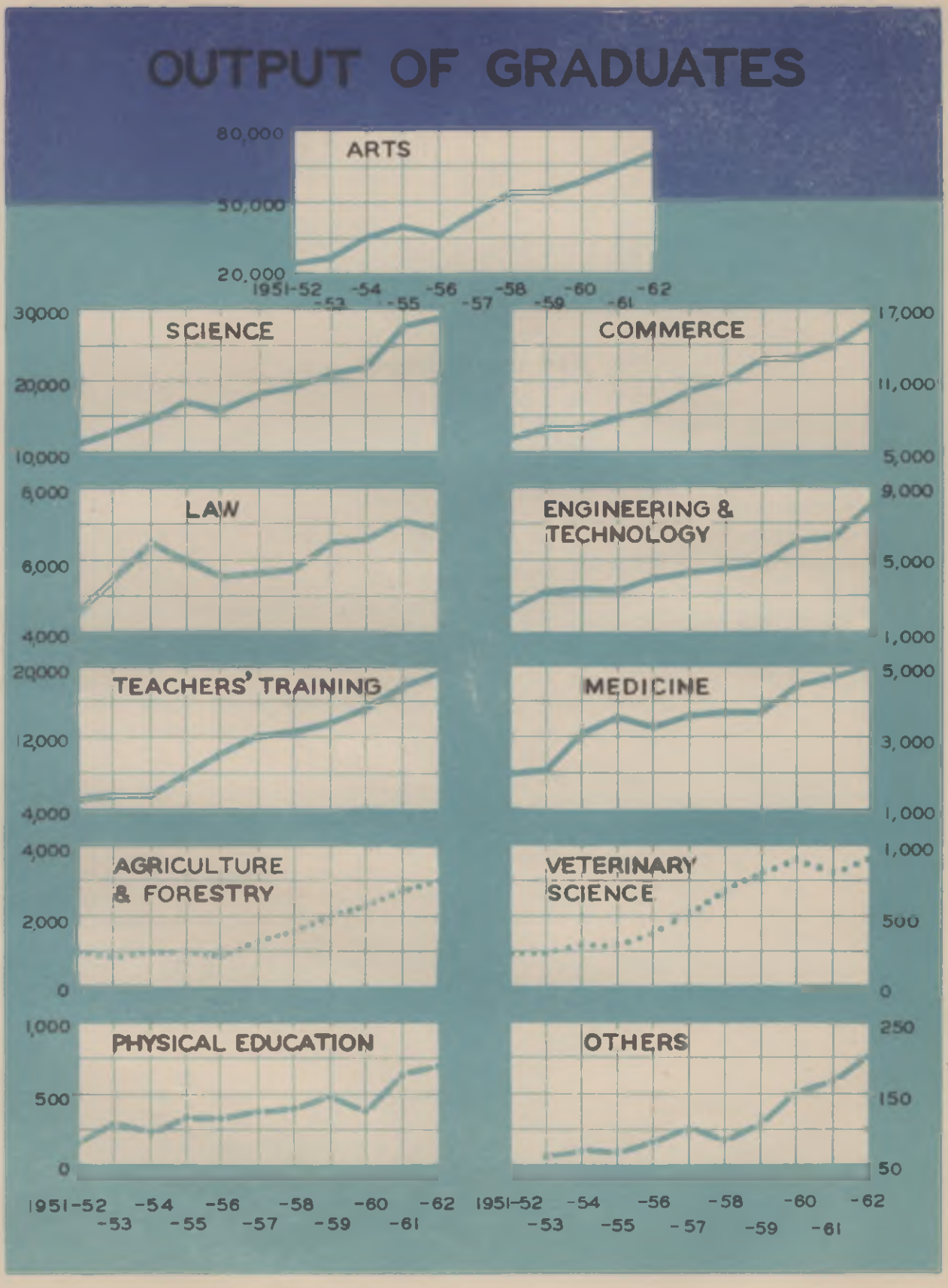

विदेश स्थित भारतीय विद्यार्थी, 1964

INDIAN STUDENTS ABROAD, 1964

स्वाधीनता के बाद उच्च अध्ययन और प्रशिक्षण के लिए विदेशों को जाने वाले भारतीय विद्यार्थियों की संख्या में हर वर्ष वृद्धि हुई है । बाहर जाने के लिए विद्यार्थी या तो अपने साधनों का उपयोग करते हैं अथवा केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकारों, अर्ध-सरकारी संस्थाओं तथा निकायों की छात्रवृत्तियां और विदेशी सरकारों, उद्योगों, स्वायत्त तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की छात्रवृत्तियां तथा अधि-छात्र-वृत्तियां प्राप्त करते हैं ।

इस चार्ट में 1 जनवरी 1964 को विदेशों में अध्ययन करने वाले 14,370 छात्रों और 940 प्रशिक्षणाधीन छात्रों का वितरण दिखाया गया है । इन में से सब से अधिक छात्र अमरीका (46.6 प्रतिशत) में हैं और इसके बाद पश्चिम जर्मनी (26.4 प्रतिशत) तथा युनाइटेड किंगडम (18.2 प्रतिशत) का स्थान आता है ।

Flow of Indian students to foreign countries for higher studies and training is increasing year after year since independence. The scholars go out on their own resources or with the help of scholarships from Central or State Governments, semi-public institutions and bodies and scholarships and fellowships from foreign governments, industries, autonomous and international organisations.

This chart shows the distribution of 14,370 scholars studying and 940 undergoing training abroad on 1st January, 1964. The largest number of these students was in U.S.A. (46·6 per cent), followed by West Germany (26·4 per cent) and U.K. (18·2 per cent).

INDIAN STUDENTS ABROAD

AS ON 1. 1. 1964

(FIGURES IN THIN TYPE INDICATES THE NUMBER OF TRAINEES NOT INCLUDED IN THE NUMBER OF STUDENTS INDICATED IN THICK TYPE)

भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्र, 1962-63

FOREIGN STUDENTS IN INDIAN UNIVERSITIES, 1962-63

विद्यार्थियों के आदान-प्रदान के विषय में भारत द्वारा विदेशों के साथ किए गए विभिन्न करारों के अन्तर्गत बहुत से विद्यार्थी अध्ययन के लिए भारत में आते हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक छात्रवृत्ति योजनाओं के अन्तर्गत छात्रवृत्तियां तथा अधि-छात्रवृत्तियां देने की व्यवस्था भी की गई है ।

इस चार्ट में 3,923 विदेशी विद्यार्थियों का देश-वार विभाजन दिया गया है जो 1962–63 में भारत के विश्व-विद्यालयों में अध्ययन कर रहे थे । चार्ट में यह दिखाई देगा कि अधिकांश विद्यार्थी दक्षिण पूर्व एशिया, अफ़्रीका और मध्य-पूर्व देशों से आए हैं। सबसे अधिक संख्या (16 प्रतिशत), नेपाल के विद्यार्थियों की है; उसके बाद श्रीलंका (11 प्रतिशत), केनिया (11 प्रतिशत) और मलाया (10 प्रतिशत) का स्थान आता है ।

लगभग एक तिहाई विद्यार्थियों ने मानव विद्याओं का अध्ययन किया और 29 प्रतिशत ने विज्ञान विषयों का । लगभग 18 प्रतिशत विद्यार्थी आयुर्विज्ञान के थे और लगभग 7 प्रतिशत इंजीनियरी तथा प्रोद्योगिकी के ।

Under the various agreements entered into by India with foreign countries for the exchange of students on reciprocal basis, many students come to India for studies. Also, provision has been made for the award of scholarships and fellowships under the cultural scholarships schemes.

This chart shows the country of origin of the 3,923 foreign students studying in universities in India in 1962-63. It will be seen that a great majority of the students came from South East Asia, Africa and Middle East countries. The largest number was from Nepal (16 per cent), followed by Ceylon (11 per cent), Kenya (11 per cent) and Malaya (10 per cent).

About 1/3rd of the students studied humanities and another 29 per cent science subjects. Nearly 18 per cent of the students took medicine and about 7 per cent engineering and technology.

FOREIGN STUDENTS IN INDIAN UNIVERSITIES, 1962-63

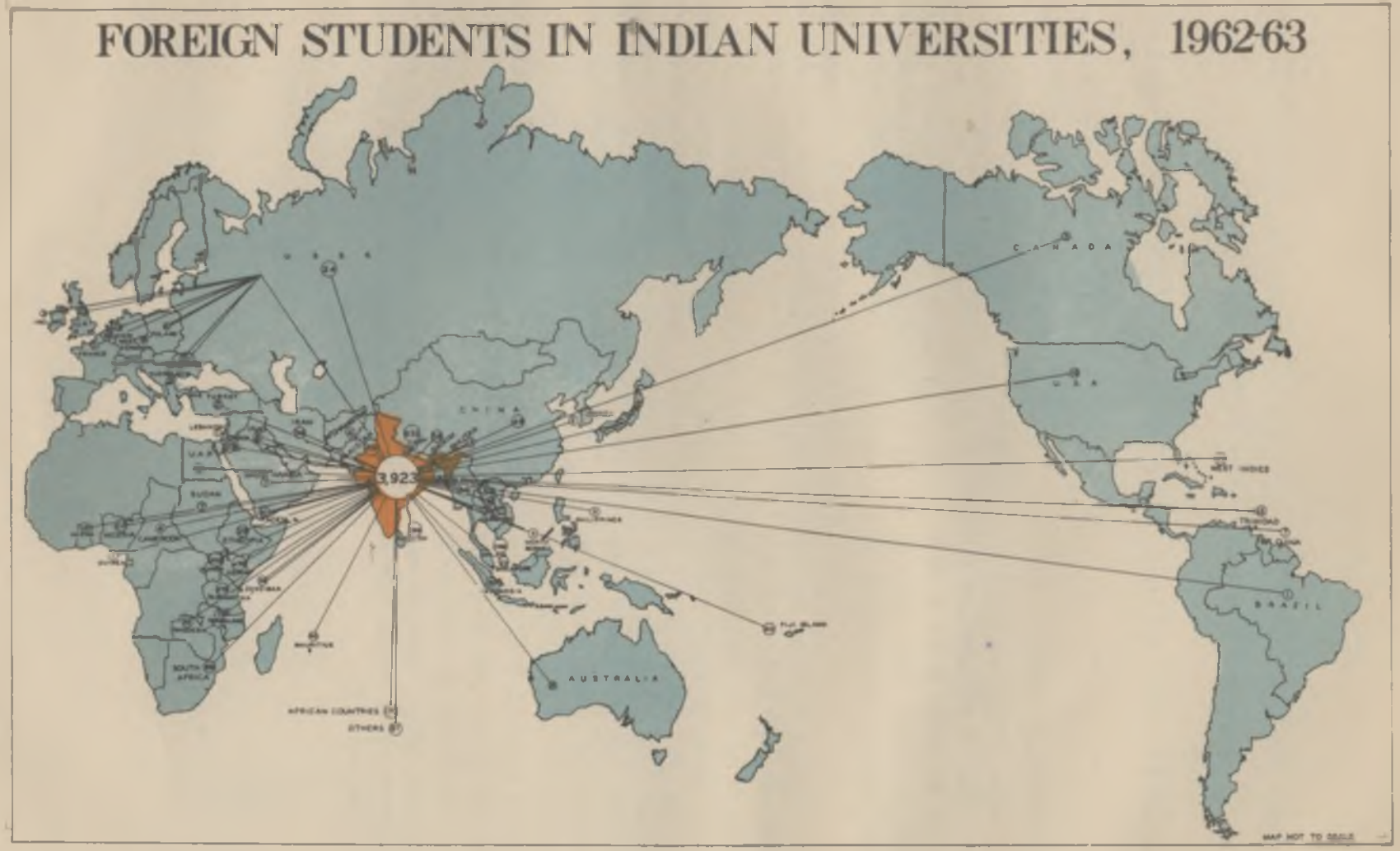

छात्रवृत्तियां तथा अन्य आर्थिक रियायतें, 1961-62

SCHOLARSHIPS AND OTHER FINANCIAL CONCESSIONS, 1961-62

(हिताधिकारियों की संख्या)

निर्धनता को शिक्षा के मार्ग में, विशेषकर प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए, बाधक नहीं होना चाहिए । इस सिद्धांत को व्यवहार में लाने के उद्देश्य से योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति, वृत्तिका, फीस माफी तथा अन्य आर्थिक रियायतों के रूप में सहायता दी जाती है ।

इस चार्ट में 1961-62 में विभिन्न प्रकार की संस्थाओं में विभिन्न प्रकार की सहायता पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या दी गई है । तीनों प्रकार की सहायता पाने वाले विद्यार्थी हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में सबसे अधिक हैं । कुल विद्यार्थी-संख्या के प्रतिशत के रूप में सब से अधिक लाभ उन विद्यार्थियों को मिला है जो व्यवसायिक तथा विशेष शिक्षा कालेजों में थे । इन कालेजों के 42 प्रतिशत विद्यार्थी हिताधिकारी थे ।

यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि फ़ीस माफी का सम्बन्ध फ़ीस की छूट पाने वाले केवल उन्हीं विद्यार्थियों से है जो ऐसी संस्थाओं में अध्ययन कर रहे हों जहां शिक्षा निःशुल्क नहीं है । इसमें बड़ी संख्या के वे विद्यार्थी शामिल नहीं हैं जो निःशुल्क शिक्षा देने वाली संस्थाओं में अध्ययन कर रहे हैं ।

(NUMBER OF BENEFICIARIES)

Poverty should not be a barrier to education, particularly in the case of talented persons. In order to make this practical, financial help is given to deserving students in the form of scholarships and stipends, free-studentships and other financial concessions.

This chart gives the number of beneficiaries in 1961-62 of these types of assistance for studies in different types of institutions.

The highest number of beneficiaries of all the three types of benefits were in high/higher secondary schools. As a per cent of total enrolment, the maximum benefit accrued to those in professional and special educational colleges. 42 per cent of the students in these colleges were the beneficiaries.

A point to be noted is that freestudentships involve only those students who are studying in institutions where education is not free and are exempted from paying tuition fee. This does not include the large number of students enrolled in institutions where education is free.

SCHOLARSHIPS & OTHER FINANCIAL CONCESSIONS, 1961-62

NUMBER OF BENEFICIARIES

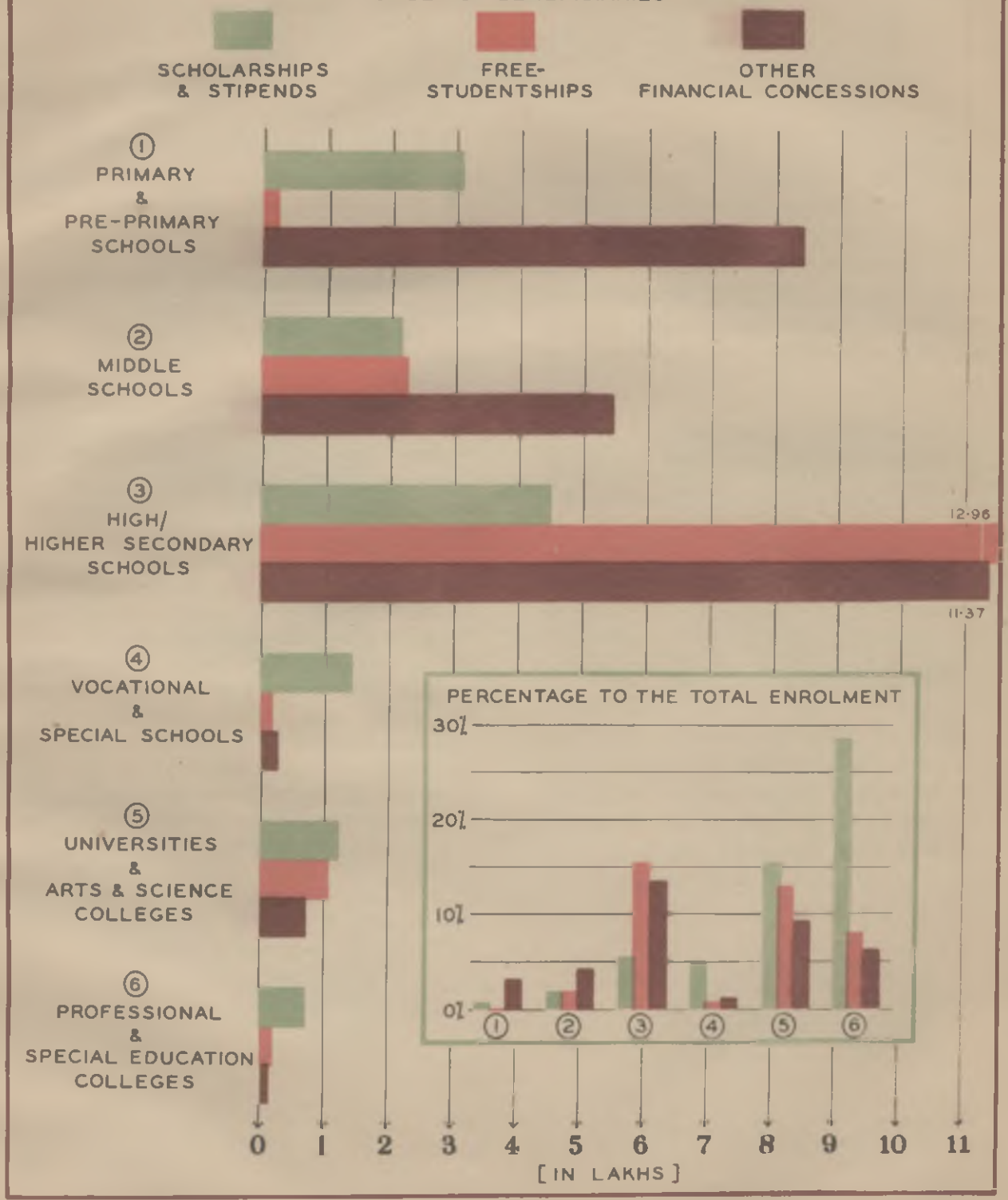

छात्रवृत्तियां और वृत्तिकायें, स्रोतानुसार, 1961-62

SCHOLARSHIPS AND STIPENDS BY SOURCES, 1961-62

निर्धन किंतु प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का अध्ययन जारी रखने में सहायता करने के लिए केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारें और अन्य एजेंसियां छात्रवृत्तियां तथा वृत्तिकाएं प्रदान करती हैं। इस चार्ट में विभिन्न एजेंसियों द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्तियों तथा वृत्तिकाओं के हिताधिकारियों की संख्या और उन छात्रवृत्तियों आदि पर होने वाला व्यय दिखाया गया है।

सबसे अधिक संख्या उन विद्यार्थियों की है जो राज्य सरकारों की छात्रवृत्तियों तथा वृत्तिकाओं से लाभान्वित हुए हैं; इसके बाद केन्द्रीय सरकार और संस्थाओं का स्थान आता है। राज्य सरकारों ने हिताधिकारियों पर 1053·7 लाख रुपये खर्च किए जब कि केन्द्रीय सरकार का खर्च 344.1 लाख रुपये और संस्थाओं का 62.2 लाख रुपये था। स्थानीय निकायों ने 11.1 लाख रुपये खर्च किए और अन्य एजेंसियों ने 54.8 लाख रुपये। छात्रवृत्तियों तथा वृत्तिकाओं पर समस्त स्रोतों का खर्च 1526 लाख रुपये हुआ जिससे 1,314 हजार विद्यार्थियों को लाभ पहुंचा। केन्द्रीय सरकार की छात्रवृत्ति की प्रति विद्यार्थी औसत राशि 446 रुपये प्रतिवर्ष और राज्य सरकारों की छात्रवृत्ति की 95 रुपये प्रतिवर्ष है। संस्थाओं, स्थानीय निकायों तथा अन्य एजेंसियों द्वारा दी गई औसत राशि क्रमशः 106, 40 और 155 रुपये है। सभी स्रोतों की मिला कर प्रति विद्यार्थी औसत छात्रवृत्ति की राशि 116 रुपये है।

To help the poor but meritorious students to continue their studies, the Central Government, the State Governments and other agencies award scholarships and stipends. This chart shows the number of beneficiaries of these scholarships and stipends instituted by different agencies and the expenditure on them.

The maximum number of students benefited from the scholarships and stipends instituted by State Governments followed by those instituted by the Central Government and institutions themselves. The State Governments spent Rs. 1,053·7 lakh on the beneficiaries whereas the Central Government's expenditure was Rs. 344·1 lakh and of the institutions Rs. 62·2 lakh. The local bodies spent Rs. 11·1 lakh, and other agencies Rs. 54·8 lakh. The total amount spent by all sources together on scholarships and stipends was Rs. 1,526 lakh, which benefited 1,314 thousand students. The average scholarship per student per year works out to be Rs. 446 in the case of Central Government and Rs. 95 in the case of State Governments. The average amount awarded in the case of institutions, local bodies and other agencies was Rs. 106, Rs. 40 and Rs. 155 respectively. The average scholarship per student, taking all the sources together, was Rs. 116.

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-8695
DOC, No .....
Date.....07-07-95

SCHOLARSHIPS AND STIPENDS BY SOURCES 1961-62

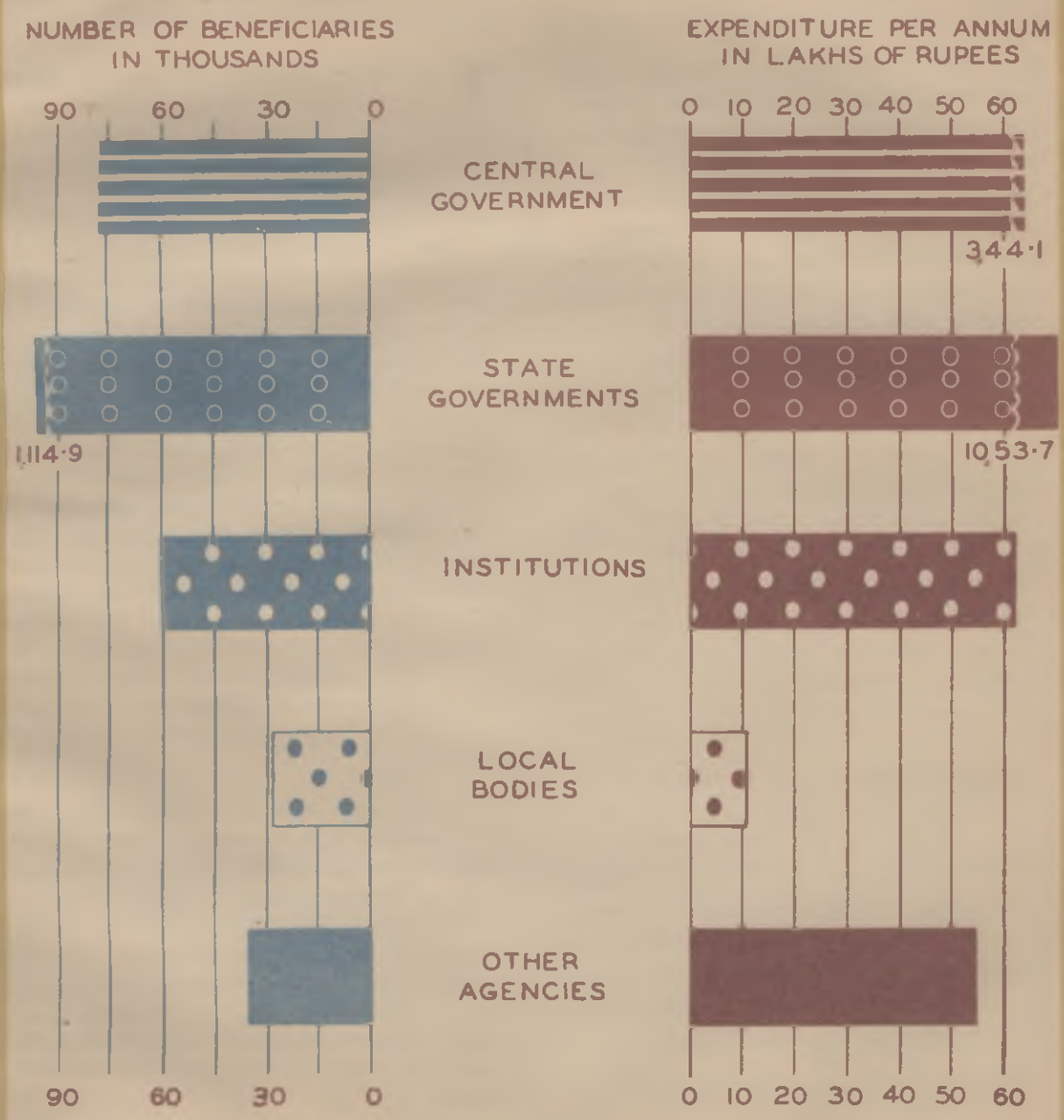

राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां, 1965

NATIONAL SCHOLARSHIPS, 1965

इस चार्ट में उन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा विदेशी छात्रवृत्तियों, अनुदानों और ऋण-योजनाओं का सामान्य परिचय देने का प्रयत्न किया गया है जिनका काम शिक्षा मंत्रालय का छात्रवृत्ति-ब्यूरो देखता है।

राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के अन्तर्गत "स्कूल छात्रवृत्ति" में निवासी स्कूलों के लिए भारत सरकार की योग्यता-छात्रवृत्ति योजनाएं आती हैं। इसके अतिरिक्त स्कूल के अध्यापकों के बच्चों के लिए छात्रवृत्तियों की एक और योजना है। "अनु-सूचित जन-जातियों आदि की छात्रवृत्तियों" में भारत सरकार की मैट्रिकोत्तर तथा समुद्रपारीय-छात्रवृत्तियां और यात्रा-अनुदान शामिल हैं जो अनुसूचित जातियों और जन-जातियों, अनुसूचित, यायावर और अर्ध-यायावर जनजातियों के विद्यार्थियों को दिए जाते हैं। "सांस्कृतिक छात्रवृत्तियों" में विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के युवक-कार्यकर्ताओं को दी जाने वाली छात्र-वृत्तियां और भारत में अध्ययन के लिए विदेशी छात्रों को दी जाने वाली सामान्य सांस्कृतिक छात्रवृत्तियां शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, विदेशी भाषा छात्रवृत्ति योजना और संघ-शासित-क्षेत्र समुद्रपारीय-छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत भी छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

विदेशी छात्रवृत्तियों के अन्तर्गत भारत सरकार की एक योजना के अनुसार विदेशी छात्रों को भारत में अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां दी जाती हैं और दूसरी योजना में विभिन्न विदेशी सरकारें भारतीय छात्रों को अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां देती हैं। भारत सरकार की एक अन्य योजना में जिसे "आंशिक आर्थिक सहायता योजना" कहा गया है, विदेशों में अध्ययन करने वाले योग्य भारतीय छात्रों को सब्याज प्रतिदेय ऋण के रूप में आर्थिक सहायता दी जाती है।

This chart attempts to give a general idea of some of the important national and external scholarships, grants and loans schemes operated by the Bureau of Scholarships in the Ministry of Education.

Under the national scholarships, the 'scholarships in schools' include the Government of India merit scholarships schemes in residential schools. There is another scheme of scholarships for the children of school teachers. The 'scholarships for scheduled tribes etc.' include the Government of India post-matric and overseas scholarships and the passage grants to scheduled caste, scheduled tribe, denotified, nomadic and semi-nomadic tribe and low income group students. The 'cultural scholarships' include the scholarships to young workers in different cultural fields and the general cultural scholarships for foreign students for study in India. Besides these, scholarships are awarded under the foreign languages scholarships scheme and the Union Territories overseas scholarships scheme.

Under the external scholarships, one Government of India scheme, offers scholarships to foreign students for studies in India, and in another Indian students are offered scholarships for studies by various foreign countries. Another Government of India scheme known as the 'partial financial assistance scheme' provides for financial assistance—in terms of interest-bearing refundable loans—to deserving Indian students for study abroad.

NATIONAL SCHOLARSHIPS 1965

SCHEMES	NUMBER OF SCHEMES	NUMBER OF SCHOLARSHIPS PER YEAR
NATIONAL SCHOLARSHIPS	1	2,850
SCHOLARSHIPS IN SCHOOLS	1	200
SCHOLARSHIPS TO CHILDREN OF SCHOOL TEACHERS	1	500
LOAN SCHOLARSHIPS	1	26,500
SCHOLARSHIPS TO SCHEDULED TRIBES ETC.	3	NOT FIXED
CULTURAL SCHOLARSHIPS	2	270
SCHOLARSHIPS FOR POST-MATRIC STUDIES IN HINDI	1	1,000

GENERAL SCHOLARSHIPS SCHEME FOR FOREIGN STUDENTS

COUNTRY	SCHOLARSHIPS RECOMMENDED	COUNTRY	SCHOLARSHIPS RECOMMENDED
ADEN	4	MAURITIUS	7
AFGHANISTAN	7	NEPAL	10
ARAB REFUGEES	5	NIGERIA	8
BURMA	6	NORTHERN RHODESIA	10
CAMBODIA	1	NORTH VIETNAM	1
CAMEROON	2	PHILIPPINES	3
CEYLON	10	PORTUGESE TERRITORIES IN AFRICA	3
ETHIOPIA	5	SAUDI ARABIA	2
FIJI	4	SIERRA LEONE	4
GHANA	2	SOMALIA	4
INDONESIA	8	SOUTH AFRICA	11
IRAN	3	SOUTHERN RHODESIA	5
IRAQ	3	SOUTH VIETNAM	3
JAPAN	3	SOUTH WEST AFRICA	3
JORDAN	4	SUDAN	4
KENYA	14	SYRIA	2
KUWAIT	2	REPUBLIC OF TANGANYIKA AND ZANZIBAR	6
LEBANON	3	THAILAND	3
LIBARIA	3	TURKEY	1
MADAGASCAR	1	UGANDA	14
MALAWI	6	U. A. R.	3
MALI	2	LAOS	2
MALAYSIA	7	WEST INDIES	6

SCHOLARSHIPS / FELLOWSHIPS OFFERED TO FOREIGN COUNTRIES

COUNTRY	SCHOLARSHIPS OFFERED
FRANCE	6
UNITED ARAB REPUBLIC	10
YUGOSLAVIA	5
POLAND	5
WEST GERMANY	20
COMMONWEALTH COUNTRIES	113

SCHOLARSHIP OFFERS FROM FOREIGN COUNTRIES

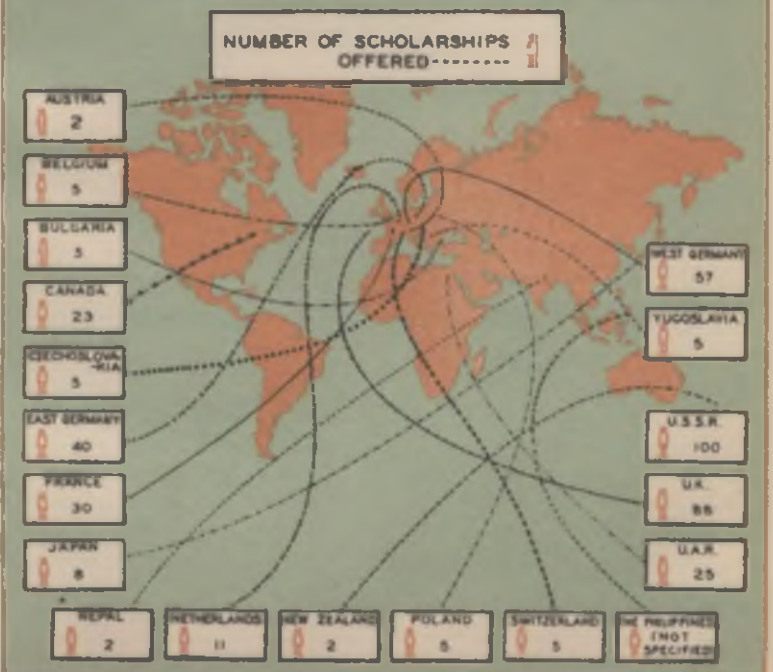

PARTIAL FINANCIAL ASSISTANCE SCHEMES

→ 26 LOANS WORTH RS 72,400/-

नवीनतम सांख्यिकीय प्रकाशन

क्रम संख्या	नाम	कीमत
		रु० पै०
1.	एज्यूकेशन इन इंडिया–खंड I—1960–61	20·50
2.	एज्यूकेशन इन इंडिया–खंड II—1960–61	18·00
3.	एज्यूकेशन इन इंडिया–खंड II—1961–62	8.50
4.	एज्यूकेशन इन इंडिया–खंड II—ए (परिशिष्ट)–1962–63 . . .	7·50
5.	एज्यूकेशन इन यूनिवर्सिटीज इन इंडिया—1960–61	12·00
6.	एज्यूकेशन इन स्टेट्स—ए स्टैटिस्टिकल सर्वे—1961–62 . . .	15·50
7.	डाइरेक्टरी आफ इन्स्टीच्यूशन्स फार हायर एज्यूकेशन—1965 . . .	4.60

आगामी प्रकाशन

1. एज्यूकेशन इन इंडिया–खंड I—1961–62
2. एज्यूकेशन इन यूनिवर्सिटीज इन इंडिया—1961–62
3. एज्यूकेशन इन स्टेट्स—ए स्टेटिस्टिकल सर्वे—1962–63
4. डाइरेक्टरी आफ इन्स्टीच्यूशन्स फार हायर एज्यूकेशन—1967

टिप्पणी :—ये पुस्तकें प्रकाशन प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, भारत सरकार, सिविल लाइन्स दिल्ली से प्राप्त की जा सकती हैं ।

NIEPA DC
D08695

GMGIPND-PLW-200/19/Edn./66-67-3,000.